मासिक

अध्यात्म संदेश

जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई – पत्रिका

वर्ष:3 | अंक:13 | पृष्ठ:42 | मूल्य:नि:शुल्क | इंदौर–उज्जैन | मंगलवार | अगस्त 2023 | अधिमास/श्रावण/भाद्रपद मास (6), विक्रम संवत् 2080 | इ.संस्करण

– वंदे मातरम
'जननी – जन्मभूमिश्च,
स्वर्गादपि गरीयसी'

– अखिल भारतीय सारस्वत
सम्मान समारोह – 2023

प्रेरणा स्रोत
महासिद्ध गुरू गोरक्षनाथ जी

सलाहकार समिति
महंत बालक नाथ योगी जी
गद्दीनशीन महंत, मठ अस्थल बोहर, रोहतक
संसद सदस्य (लोकसभा), अलवर, राजस्थान
कुलाधिपति, श्री बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय (हरियाणा)

महंत पीर योगी रामनाथ जी
भर्तृहरि गुफा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महंत डॉ. योगी विलासनाथ जी
अध्यक्ष, श्री गुरू गोरक्षनाथ शिव पंचायतन मन्दिर (ट्रस्ट), गाळणे (महाराष्ट्र)

राष्ट्रसंत बालयोगी उमेशनाथ जी
पीठाधीश्वर-वाल्मीकि धाम, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रधान सम्पादक
योगी शिवनन्दन नाथ

सम्पादक मंडल

वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. संतोष खन्ना (दिल्ली)

सम्पादक
डॉ. अलका शर्मा (दिल्ली)

उपसम्पादक
श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा (लखनऊ)
सुश्री इंदु सिंह "इन्दुश्री" (मध्य प्रदेश)

ग्राफिक्स
IDEAwave COMMUNICATIONS

प्रकाशक एवं स्वामी
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

• गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
• पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों का है। प्रकाशक, प्रधान संपादक एवं संपादक मंडल इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायित्व नहीं होंगे।
• समस्त विवादों का निस्तारण, मध्य प्रदेश सीमांतर्गत सक्षम न्यायालयों में किया जाएगा।

editor.adhyatmsandesh@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1	संपादक की कलम से	डॉ. अलका शर्मा	03
2	सनातन धर्म में अधिकमास...	डॉ. शारदा मेहता	06
3	अगस्त क्रांति	डॉ. सन्तोष खन्ना	09
4	अमृत महोत्सव और...	सुजाता प्रसाद	12
5	हम इस प्यारे वतन के....	लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	13
6	जीवों के प्रति प्रेम को प्रदर्शित...	श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा	14
7	रक्षाबंधन	श्रीमती शोभा रानी तिवारी	15
8	आत्मशक्ति एवं योग्यता की...	डॉ. अजय शुक्ला	16
9	पर्यावरण चिन्तन 7	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह	19
10	धर्म	रमेश चन्द्र	20
11	जागो हे रघुबीर	ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र	21
12	पौराणिक शास्त्र : मानव अधिकार...	डॉ. अलका शर्मा	22
13	हरेली की पहचान गेड़ी	श्रीमती ज्योति सक्सेना	24
14	सुहाना बारिश का मौसम	संजू पाठक	25
15	घर के प्रेत या पितर...	पंडित कैलाशनारायण	26
16	भरत (सॉनेट)	प्रो. विनीत मोहन औदिच्य	27
17	मानवतावादी विश्व कवि तुलसीदास	डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम	28
18	सखी चलें मधुवन में	डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक	30
19	इंद्र धनुष	डॉ. अर्चना प्रकाश	31
20	वर्षा ऋतु का गीत	प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे	33
21	जनमानस के श्रेष्ठ कवि रामभक्त...	भावना दामले	34
22	लोक संस्कृति की लय है कजरी	कृष्ण कुमार यादव	36
23	मोह	मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	40
24	कजलियां नहीं महज एक देशज...	सुश्री इंदु सिंह 'इंदु श्री'	41
25	आदि देव महादेव	डॉ. सुनिता सिंह 'सुधा'	42

संपादक की कलम से

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

कलम आज उनकी जय बोल।
जलाकर अस्थियाँ बारी बारी।
चटकाई जिनमें चिंगारी।।
जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर।
लिए बिना गर्दन का मोल।।

कलम आज उनकी जय बोल।
अंधा चकाचौंध का मारा।
क्या जाने इतिहास बेचारा।।
साक्षी है जिनकी माहिमा के।
सूर्य, चंद्र भूगोल खगोल।।

कलम आज उनकी जय बोल..।।

अध्यात्म- संदेश परिवार के समस्त गुणी पाठकों
वंदे मातरम।।

अगस्त मास के नाम स्मरण मात्र से ही 75 वर्ष पूर्व भारत को आजादी दिलाने के लिए असंख्य, लोगो द्वारा बरसो तक झेली यातनाएं, शोषण अत्याचार निराशा, प्रताड़ना स्वतंत्रता के लिए गए आंदोलन, कठोर परिश्रम, स्वतंत्रता की पुण्य बलि -वेदी पर माँ भारती के सच्चे सपूतो, स्वतंत्रता सेनानियों का हँसते हँसते प्राणोत्सर्ग करना चलचित्र की भांति दृष्टिपटल पर घूम जाता है। आज उन्हीं करोड़ो

देशभक्तों, शहीदों को दिल से नमन करने का महीना है । जी हाँ उनकी स्मृति में केवल एक दिन स्वतंत्रता दिवस मनाकर तो क्या हम हर दिन उनको नमन करके भी, उनके ऋण से उऋण नही हो पायेगे। आज जिस आजाद भारत की सुंदर तसवीर आप विश्व पटल पर देख रहे है। इस आजाद भारत की भव्य इमारत को बनाने के लिए जिन लोगो ने नींव की ईटो की तरह अपना जीवन देश के नाम कर दिया। आज उन्ही सब देशभक्तों को कोटि कोटि नमन!

इस बार अगस्त मास अनेको महत्वपूर्ण दिनों की सौगात लेकर आया है।

3 अगस्त हिंदी साहित्याकाश के देदीप्यमान सितारे, हिंदी की सभी विधाओं पर लेखनी चलाने वाले,हिंदी भाषा के मूर्धन्य लेखक 'पद्म भूषण' से सम्मानित कवि श्री मैथिली शरण गुप्त जी की जयंती का पावन पर्व है। हिंदी साहित्य में उनका योगदान सदा अविस्मरणीय ही रहेगा।

9 अगस्त विश्व आदिवासी दिवस है जो कि आदिवासियो की समस्याओं का निराकरण करने और उनके जीवन स्तर को उन्नत करने, उनके उत्थान के लिए किए गए प्रयासो का समुचित मूल्यांकन के दिन के रूप में मनाया जाता है।

15 अगस्त हमारे भारत देश का स्वाधीनता दिवस है। जो आजादी के पुण्य महायज्ञ में अपने प्राणों की आहुति देने वाले, अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले लाखों करोड़ों माँ भारती के सच्चे सपूतों, देशभक्तों, रण बांकुरों के सर्वोच्च बलिदान का स्मरण कराता है।

23 अगस्त 'रामचरितमानस' महाकाव्य के रचयिता गोस्वामी तुलसी दास जी की जयंती है युगयुगान्तर तक अपने ज्ञान से समस्त जीवों के पथप्रदर्शक बनने वाले इस महाकाव्य के रचयिता गोस्वामी तुलसी दास जी को इस पुण्य अवसर पर कोटि कोटि नमन।

29 अगस्त को दक्षिण भारत का प्रमुख ओणम पर्व और देश विदेश में हॉकी को सम्मान दिलाने वाले हॉकी के जादूगर कहे जाने वाले मेजर ध्यानचंद की जयंती भी है

30 अगस्त रेशम की नाजुक डोरी से बंधा लेकिन वज्र से भी मजबूत भाई बहन के प्रेम का पावन त्यौहार रक्षाबंधन है।

या यूं कहिए -

बचपन की सुखद यादों का चित्रहार है राखी।
शब्दो से परे भाई बहन के अहसासों का पवित्र त्यौहार है राखी।।

भारत के महापुरुषों के उच्चादर्शों, भारत के विभिन्न त्योहारों से परिचय करता और भी मनभावन लेखों रूपी से फूलों के सुवासित गुलदस्ते के सदृश 'अध्यात्म संदेश' का अगस्त मास का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। सभी गुणी लेखकों को पत्रिका में सहयोग के लिए अनेकशः धन्यवाद

स्वतंत्रता दिवस की असीम शुभकामनाओ सहित

-डॉ. अलका शर्मा

GSS FOUNDATION

वृन्दावन की भूमि पर सारस्वत सम्मान

तृतीय

अखिल भारतीय सारस्वत सम्मान समारोह

3 दिसंबर 2023 | वृन्दावन

यह सम्मान राष्ट्र निर्माण एवं जनकल्याण को समर्पित हिंदी भाषी साहित्यकारों, शिक्षकों, चिकित्सकों, समाज–सेवकों, वैज्ञानिकों, लघु उद्यमियों, लेखकों, कवियों, पत्रकारों, शोधार्थियों अथवा अन्य विधाओं की प्रतिभाओं को प्रदान किया जाएगा, जो अपनी प्रतिभा–सेवा के द्वारा राष्ट्र की शैक्षणिक, आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक, कला एवं संस्कृति की उन्नति में अपना निरंतर योगदान दे रहे हैं।

महायोगी गोरक्षनाथ लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड– 2023

(आवेदक के लिए न्यूनतम आयु सीमा : 55 वर्ष)

यह अवार्ड विश्व में आध्यात्मिक योग ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी की स्मृति का सम्मानित प्रतीक चिन्ह है। यह प्रतिष्ठित अवार्ड योग्य व्यक्तियों को सम्मानित कर उनके उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देता है, जिन्होंने अपने जीवन में संबंधित कार्य क्षेत्रों में असाधारण योगदान देकर उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

महायोगी गोरक्षनाथ लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

सारस्वत सम्मान एवं लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्राप्तकर्ताओं को फाउण्डेशन द्वारा आयोजित भव्य समारोह में उनके सम्मान के अनुरूप एक प्रशस्ति पत्र, अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा ।

भारतवर्ष के समस्त प्रांतों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं | **प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 30 अक्टूबर 2023**

For application form : Please type : "name" - "place" -"Award Name" and send it to 7415410516

मुख्य प्रायोजक

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

E-mail : award.gssfoundation@gmail.com

Website : www.gssfoundation.org

संपर्क सूत्र : योगी शिवनंदन नाथ | Ph. : 6266441148

सनातन धर्म में अधिकमास का माहात्म्य

डॉ. शारदा मेहता
स्वतंत्र लेखन
ऋषिनगर विस्तार,
उज्जैन (म.प्र.)

भारतीय संस्कृति में अधिक मास का धार्मिक रूप से अत्यधिक महत्व है। यह तीन वर्ष में एक बार आता है। इसके अनेक नाम हैं जैसे अधिकमास, मलमास, संसर्प, मलिम्लुच, पुरुषोत्तम मास आदि। प्रत्येक भाषा में इसे अलग–अलग नाम से जाना जाता है। पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार जिस प्रकार प्रत्येक मास का कोई न कोई स्वामी होता है किन्तु अधिकमास का कोई स्वामी नहीं है। अतः इस मास में शुभ–कार्य करना वर्जित है। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेश, मुंडन आदि कोई भी कार्य इस मास में नहीं होते हैं। पौराणिक ग्रन्थों की कथा के अनुसार एक बार अधिक मास भगवान विष्णु के पास गया और उसने उन्हें अपनी समस्या बतलाई। वह बहुत दुरूखी था कि उसका कोई स्वामी नहीं है। विष्णु भगवान ने उसे दुरूखी देखा तो उन्हें उस पर दया आ गई। उसी दिन से ही भगवान विष्णु ने उसे अपना नाम दे दिया और तभी से यह मास पुरुषोत्तम मास के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

यस्मिन् चान्द्रे न संक्रान्तिः सो अधिमासो निहह्यते, तत्र मंगल कार्याणि नैव कुर्यात् कदाचन
यस्मिन् मासे द्वि संक्रान्ति क्षयः मासः स कथ्यते, तस्मिन् शुभाणि कार्याणि यत्नतः परिवर्जयेत।।

त्रयोदशः मासः इन्द्रस्य गृहः

अर्थात् चन्द्र संक्रान्ति न होने पर इस माह में कोई भी शुभ कार्य करना वर्जित है। अधिक मास में श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्रीविष्णु तथा भगवान शंकर जी की भक्ति भाव से पूजन अर्चन धार्मिक पुस्तक का पारायण तथा श्रीगीताजी के पन्द्रहवें अध्याय का वाचन किया जाता है। उन सबका सौ गुना फल प्राप्त होता है। अतः हमें अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार भगवान की आराधना करनी चाहिए।

धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार दो अमावस्या के मध्य जब कोई संक्रान्ति नहीं होती है तो उस वर्ष अधिक मास होता है। विदेशों में तेरह की संख्या को शुभ फल दायी नहीं माना जाता

है। हमारे यहाँ प्रदोष व्रत १३वीं तिथि को ही होता है, जो शिवजी को समर्पित है। इसे शुभ माना जाता है। हमारी भारतीय संस्कृति में अधिक मास आध्यात्मिक उन्नति के लिये व्रत उपवास, पूजा, पाठ उपासना तथा धार्मिक ग्रन्थों के पठन पाठन के लिये पूजनीय माना जाता है। इसमें विवाह मुंडन यज्ञोपवीत जैसे संस्कार करना वर्जित है।

सूर्यमास से वर्ष में ३६५ दिन तथा ६ घंटे होते हैं और चन्द्र मास ३५४ दिन का वर्ष होता है। यह ग्यारह दिन का अन्तर तीन वर्ष में लगभग एक माह का होता। अतरू प्रत्येक तीसरे वर्ष में अधिक मास हिन्दू कैलेंडर में समायोजित किया जाता है, जिसे अलग-अलग नामों से उल्लेखित किया जाता है। अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार प्रत्येक चौथे वर्ष को लीप ईयर नाम दिया गया है। प्रत्येक चौथे वर्ष में फरवरी माह 29 दिन का होता है। पद्मपुराण के अनुसार-

मासा सर्वे द्विजश्रेष्ठ सूर्यदेवस्य संक्रमारू।
अधिमासस्त्व संक्रान्तिर्मासोऽसौ शरणं गतः।।
मम प्रियतमोऽत्यन्तं मासोऽयं पुरुषोत्तमः।
अस्याहं सततं विप्र स्वामित्वे पर्यवस्थितः।।

(पद्मपुराण, पुरुषोत्तममास महात्म १७/१४-१५)

अर्थात हे द्विजश्रेष्ठ सभी माह सूर्यदेव की संक्रान्ति के कारण होते हैं। तभी से पुरुषोत्तम मास मुझे अत्यधिक प्रिय है। हे विप्र मैं सदैव इस पुरुषोत्तम मास को अधिक प्रेम करता हूँ। सम्मान देता हूँ। मैं पुरुषोत्तम मास के स्वामी के रूप में प्रतिष्ठित हूँ।

शिव पुराण कहता है कि -

''त्रयोदशो मास इन्द्रस्य गृहः।''

(शिव पुराण २/५/२/५२)

एक लाख गायत्री मंत्र का जो फल प्राप्त होता है उतना इस पुरुषोत्तम मास में एक मंत्र जपने से हो जाता है। पांडवों ने पुरुषोत्तम मास में धर्म तप का अनुष्ठान कर परमसिद्धि प्राप्त की थी। इस माह में पूजा, दीपक दान, ध्वजा दान अनुष्ठान आदि का बड़ा महत्व है। मान्यता है कि इससे स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है।

इस मास में भगवान विष्णु के पूजन का विशेष महत्व है क्योंकि वे इस मास के स्वामी हैं। शिव पूजन का भी इस मास में महत्व बतलाया गया है। भगवान विष्णु का निवास पीपल के पेड़ में है। अधिक मास में नियमित रूप से पीपल के वृक्ष के नीचे दीपक लगाना श्रेयस्कर है। गाय के दूध से अभिषेक भी करना चाहिए। पेड़ में प्रतिदिन जल का सिंचन करना चाहिये। अधिक मास में दो एकादशी बढ़ जाती है। इन एकादशियों के नाम परमा तथा पद्मिनी हैं। पूर्णिमा भी दो होती हैं। धार्मिक तथा आध्यात्मिक उन्नति तथा शारीरिक, मानसिक विकास करने का पुरुषोत्तम मास का समय श्रेष्ठ दर्शाया गया है। धैर्य तथा ईमानदारी का जीवन जीने की कला उपासना से ही जीवन में प्राप्त होती है। पुरुषोत्तम मास माहात्म्य में कहा गया है-

द्वादशक्षरमंत्रोऽयं यो जपेत् कृष्ण सन्निधौ।
दशवारमपि ब्रह्मन् स कोटिफल मश्नुते।।

(पुरुषोत्तम मास महात्म्य १७/२३)

अर्थात् - इस मास में गीता पाठ पंचाक्षर शिवमंत्र, अष्टाक्षर नारायण मन्त्र, द्वारदशाक्षर वासुदेवमंत्र आदि के जप का लाख गुना, करोड़ गुना या अनन्त फल होता है।

ईस्वी सन् 2023 में श्रावण मास में अधिक मास या पुरुषोत्तम मास है। इसका प्रांरभ 18 जुलाई से होगा और यह 16 अगस्त तक रहेगा। ज्योतिष शास्त्रियों के अनुसार अधिक मास में राशि के अनुसार दान करना चाहिए। यह मास भगवान पुरुषोत्तम को समर्पित है। भक्त गण को इस मास में भगवान विष्णु का पूजन अर्चन करना चाहिए। यदि संभव हो तो समय निकालकर श्रीविष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करना चाहिए। यदि समयाभाव हो तो स्मार्ट फोन पर या अन्य डिजिटल माध्यम पर इसके पाठ का श्रवण करना चाहिए। शिव महिम्न स्तोत्र, शिवमानस पूजा आदि का पाठ करना चाहिए। एक गृहस्थ यदि अपने घर में इन पाठों का वाचन श्रवण करेंगे तो नई पीढ़ी के बालकों की रुचि भी जाग्रत होगी और उनमें भक्ति भावना का प्रादुर्भाव होगा। भारतीय संस्कृति से वे परिचित होंगे और प्रतिदिन पाठ का श्रवण करने से उन्हें श्लोक शनैः शनैः कण्ठस्थ भी हो जाएंगे। निम्नलिखित श्लोक यदि बच्चों को कंठस्थ करवाएँगे तो उन्हें वे सर्वदा स्मरण रहेंगे- (शिवपूजन के लिये)

ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारूचन्द्रावतंसं,
रत्नैकल्पौज्वलागं परशुमृगवरा भीति हस्तं प्रसन्नं।
पद्मासीनं समस्तास्तुतममरगणै व्याघ्र कृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववद्यं निखिल भयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।।

अर्थात् - त्रिनेत्र धारी, चाँदी की तरह तेजोमयी चंद्र को सिर पर धारण करने वाले, जिनके अंग-अंग रत्न आभूषणों से दमक रहे हैं। चार हाथों में परशु, मृग, वर और अभय मुद्रा है। मुख मण्डल पर आनन्द प्रकट होता है, पद्मासन पर विराजित हैं, सारे देव, जिनकी वन्दता करते हैं, बाघ की खाल धारण करने वाले, ऐसे सृष्टि के मूल, रचनाकार महेश्वर का मैं ध्यान करता हूँ।

तथा विष्णु पूजन के लिये-

शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसकृशं मेघवर्ण शुभागं।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिर्भि ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्वलोकैकनाथं।।

अर्थात् - हे समस्त देवों के देव, जिनकी नाभि में पद्म है, शान्त आकार के, नाग पर शयन करने वाले विश्व के आधार, आकाश जैसे विशाल, मेघों से रंग वाले लक्ष्मी के पति कमल से नयन वाले, योगियों के समान ध्यान मगन, समस्त लोकों के नाथ, सब का संसार भय नाश करने वाले विष्णु आपका हम वन्दन करते हैं।

पुरुषोत्तम मास में देश के विद्वान ख्याति प्राप्त कथाकार विभिन्न स्थानों पर भागवत कथा, रामायणकथा, शिव-पुराण कथा

आदि का आयोजन करते हैं।

लाखों की संख्या में श्रोता गण कथा श्रवण के लिये दूरस्थ स्थानों से आते हैं। कथा श्रवण के साथ ही वहाँ चल रहे भंडारे में महाप्रसादी ग्रहण करते है और अनेक कष्टों के झेलते हुए प्रवचन सुनकर पुण्यलाभ प्राप्त करते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति और जनता की धार्मिक आस्था का अनोखे सम्मिश्रण की छटा यहाँ पर दृष्टिगोचर होती है।

मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में चौरासी महादेवों के मंदिर हैं। ये अति प्राचीन हैं। ये चौरासी महादेव के मंदिर केवल उज्जैन में ही हैं। श्रावण मास में तथा अधिक मास होने पर भक्तगण इनसे आशीर्वाद ग्रहण करने के लिये विभिन्न स्थानों से आकर इनके दर्शनों का लाभ उठाते हैं। प्राचीन मान्यता के अनुसार दूषण नामक एक राक्षस था। वह बहुत अधिक शक्तिशाली था। राक्षस को यह वरदान था कि जिस स्थान पर उसका रक्त गिरेगा, वहाँ वह चौरासी रूप धारण कर लेगा। शिव पुराण के अनुसार शंकर भगवान की एक बहिन थी, जिसका नाम श्रीप्रिया था, जिसे आधुनिक समय में क्षिप्रा नदी के नाम से जाना जाता है। शंकर भगवान ने कहा था कि यदि श्रीप्रिया जलप्रवाह के रूप में प्रकट हो तो जैसे ही दूषण राक्षस को मैं मारूँगा तो उसका रक्त नदी में घुल जाएगा और फिर उसका जन्म नहीं होगा और वह चौरासी रूप में विभक्त नहीं होगा। संयोग से नदी क्षिप्रा को आने में विलम्ब हो गया और राक्षस ने चौरासी रूप धारण कर लिए। बहिन क्षिप्रा ने जब यह देखा तो उसने शंकरजी पर जल की वर्षा कर दी, जिससे शंकर जी चौरासी टुकड़ों में विभक्त हो गये और उन्होंने दूषण के चौरासी टुकड़ों का संहार कर दिया। ये ही शंकरजी के चौरासी टुकड़े उज्जैन नगर में तथा नगर के चारों ओर चौरासी महादेव के रूप में विराजमान हैं। श्रद्धालु यहाँ पर दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। लेख के विस्तारभय से मैं यहाँ चौरासी महादेवों की सूची नहीं दे रही हूँ। हरसिद्धि मंदिर के पार्श्व में संतोषी माता मंदिर प्रांगण में स्थित श्री अगस्तेश्वर महादेव मंदिर से चौरासी महादेव की यात्रा का प्रारंभ किया जाता है और यहाँ पर पुनः दर्शन लाभ लेकर यात्रा का समापन किया जाता है। यहीं यात्रा का अन्तिम पड़ाव है। ऐसी मान्यता है कि मानव यदि इनके सम्पूर्ण दर्शन श्रद्धा भक्ति से करता है तो उसे चौरासी लाख योनियों से मुक्ति प्राप्त होती है। उज्जैनवासी परस सौभाग्यशाली हैं कि पुरुषोत्तम मास में उन्हें चौरासी महादेव सहज उपलब्ध हैं।

भारत की सनातन परम्परा प्राचीन है। हमारा ज्योतिष-शास्त्र विज्ञान सम्मत है। सूर्यमास तथा चन्द्रमास के अनुसार पृथ्वी के घूर्णन की गति में प्रति वर्ष ग्यारह दिन का अन्तर होता है। तीन वर्ष में यह अन्तर लगभग एक मास का हो जाता है। सनातन धर्म में खगोल वैज्ञानिकों, गणितज्ञों तथा ज्योतिषियों ने प्रत्येक तीन वर्ष में एक माह बढ़ाकर अधिक मास की ज्योतिषीय परम्परा का प्रणयन किया है। चैत्र माह से लेकर फाल्गुन माह तक कोई भी एक माह प्रत्येक तीन वर्ष में अधिक मास के रूप में ज्योतिष शास्त्र के आधार से निर्धारित है। प्रत्येक माह किसी न किसी देवता को समर्पित है और उसी देवता के पूजन का विशेष महत्व है। अधिक मास के स्वामी स्वयं भगवान विष्णु है। इसीलिये अधिक मास पुरुषोत्तम मास के रूप में भी जाना जाता है। सन् 2023 में ज्योतिषियों द्वारा श्रावण मास अधिक मास के रूप में निर्धारित किया गया है। वैसे श्रावण मास शिवाराधना का मास है। अतः इस माह में विष्णु भगवान के साथ ही शिवपूजन का भक्तगणों के लिये विशेष महत्व है। अधिक मास की अवधारणा यह सिद्ध करती है कि प्राचीनकाल में भी हमारी ज्योतिषीय, गणितीय तथा भौगोलिक गणना कितनी सटीक एवं समृद्धिशाली थी। आधुनिक समय के वैज्ञानिक, गणिताचार्य तथा ज्योतिषीगण अपनी स्वीकारोक्ति इसे प्रदान करते हैं। हमें इस बात का गर्व है कि विज्ञान, गणित तथा ज्योतिष शास्त्र के चरम पर हम अग्रसर हो चुके थे। सनातन परम्परा में सूर्य और चन्द्र मास का अन्तर लगभग ग्यारह दिन का होता है, जिसे प्रत्येक तीन वर्ष में अधिक मास के रूप में समायोजित कर लिया जाता है। ■

जिंदगी में किस्मत के भरोसे कभी मत बैठो, क्योंकि क्या पता कि किस्मत आपके भरोसे बैठी हो।

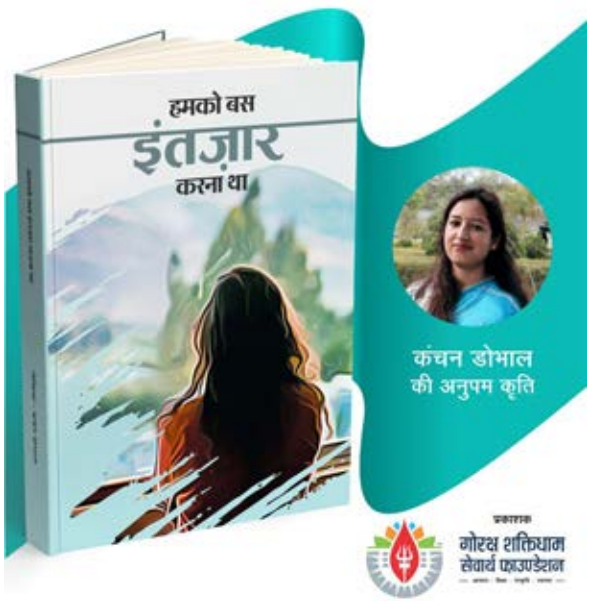

Flipkart amazon पर उपलब्ध

15 अगस्त पर विशेष

अगस्त क्रांति : स्वतंत्रता के लिए अंतिम प्रहार

डॉ. सन्तोष खन्ना
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
वरिष्ठ सम्पादक (अध्यात्म संदेश)
वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रधान संपादक :
महिला विधि भारती त्रैमासिक पत्रिका
दिल्ली–110088

शिव के पावन माह सावन के दौरान जब देश में चारों ओर शिवत्व साकार हो रहा है तो देश में कहीं–कहीं प्राकृतिक प्रकोप के रूप में शिव तांडव भी बरप रहा है। सावन में पावस ऋतु में वर्षा जीवनदायिनी होती है परंतु अतिवृष्टि और बादल फटने से जल– प्रलय– सी वाढ़ ने और भूस्खलन की कई घटनाओं से कई स्थानों पर कहर बरपाया है, कहीं–कहीं बादलों की लुकाछिपी तक भी दिखाई नहीं दी, बल्कि सूर्य देवता इतने क्रुद्ध नजर आए कि उन्होंने अपने ताप से कई क्षेत्रों को झुलसाया है।

समय एक – सा नहीं रहता। सावन जाते जाते अगस्त मास को हमारे हवाले कर गया। अगस्त मास विश्व में कई क्रांतियों का जनक रहा है, भारत में भी इस माह में समय–समय पर क्रांतियां हुई हैं। पहली बात, भारत के लिए अगस्त मास का सबसे अधिक विशेष महत्व इसलिए है कि सदियों की गुलामी के बाद 15 अगस्त, 1947 को भारत ने स्वतंत्रता के सूर्य के दर्शन किए। इसी दिन भारत से आंग्ल साम्राज्य का अवसान हो गया और अंग्रेज भारत छोड़ अपने देश प्रस्थान कर गए। अगस्त मास भारत के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि स्वतंत्रता संग्राम की आरंभिक कड़ी में 9 अगस्त, 1925 को काकोरी कांड घटित हुआ जिससे अंग्रेजी शासन की चूलें हिल गई थी और जिसके कारण शासकों ने खफ़ा हो कर देश के सेना. नियों को फांसी पर लटका दिया था। भारत के लिए अगस्त मास इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े जा रहे स्वतंत्रता संग्राम की कड़ी में आंग्ल साम्राज्य के किले पर अंतिम जबर्दस्त प्रहार इसी मास में प्रारंभ हुआ था जिसकी परिणति 15 अगस्त, 1947 को भारत की स्वतंत्रता में हुई। वर्ष 1947 में अगस्त मास में ही कलकत्ता में भयंकर साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे थे और महात्मा गांधी उस समय उन दंगों को शांत करने कलकत्ता चले गये थे जब देश आजादी का जश्न मना रहा था तो वे वहां दंगे शांत करने के लिए अनशन कर रहे थे।

9 अगस्त, 1942 को महात्मा गांधी ने **'भारत छोड़ो आंदोलन' 'क्विट इंडिया'** आंदोलन आरंभ किया जिस में उन्होंने भारत को अंग्रेजी साम्राज्य से मुक्त कराने के लिए देशवासियों को 'करो या मरो' का मंत्र दिया था। महात्मा गांधी के इस आह्वान पर देशवासियों ने देश की आजादी के लिए कमर कस ली थी और वह तब तक संघर्ष करते रहे जब तक अंग्रेज देश छोड़ने के लिए बाध्य नहीं हो गए। कहा जाता है कि जिन आंग्ल साम्राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था वहां भारत में उनके साम्राज्य का सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम की सफलता के बाद इस संग्राम का विश्व पर भी इतना जबरदस्त प्रभाव पड़ा कि अंग्रेजों को अपने सभी अधीनस्थ देशों से अपना बोरिया-बिस्तर गोल करना पड़ा और विश्व से अंग्रेजी उपनिवेशवाद नेस्तनाबूद हो गया। भारत ने जो 9 अगस्त को 'भारत छोड़ो अगस्त क्रांति' का सूत्रपात किया था उस क्रांति का रथ 15 अगस्त, 1947 की क्रांति पर पहुंचकर ही रुका। भारत की इसी स्वतंत्रता को पूर्णता प्रदान करने के लिए अभी हाल के वर्षों में स्वतंत्र भारत ने अगस्त माह में एक महत्वपूर्ण कारनामा कर दिखाया जब 5 अगस्त, 2019 को जम्मू और कश्मीर राज्य के संदर्भ में भारत के संविधान में शामिल अनुच्छेद 370 और धारा 35ए को भारत की संसद ने हटाने की मंजूरी दे दी और जम्मू कश्मीर का विशेष दर्जा समाप्त कर उसे सही अर्थों में भारत का एक अभिन्न अंग बना दिया गया। इन संदर्भों में भारत के लिए अगस्त मास क्रांति, स्वाभिमान और स्वतंत्रता का प्रतीक बन चुका है। आज हम भारत की उस अगस्त क्रांति की बात करेंगे जहां से भारत की परतंत्रता की बेड़ियों को पूर्णता तोड़ने के लिए अपना पराक्रम प्रारंभ किया था।

अगस्त क्रांति : भारत की अगस्त क्रांति की शुरुआत मुंबई के एक पार्क से हुई थी जिसका तत्कालीन नाम गोवालिया टैंक मैदान था। यह दक्षिण मुंबई में ग्रांट रोड पश्चिम पर एक पार्क था। इसी पार्क का नाम बदल कर बाद में अगस्त क्रांति पार्क कर दिया गया है। अगस्त क्रांति आंदोलन के पीछे का इतिहास क्या है इसका संक्षिप्त-सा विवरण यह है कि जब ब्रिटिश संसद ने भारत में संवैधानिक सुधारों की श्रंखला में सन् 1935 में भारतीय शासन अधिनियम, 1935 पारित किया और उसे लागू कर दिया तो इसके अंतर्गत भारत के प्रांतों में पूर्ण उत्तरदायी शासन और केंद्र में आंशिक उत्तरदायी शासन की स्थापना की गई। कांग्रेस ने इस अधिनियम के अंतर्गत होने वाले चुनावों में अंततः भाग लिया और 1937 में 11 में से 8 प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बन गये। परंतु इस संबंध में कांग्रेस और मुस्लिम लीग में मतभेद पैदा होने भी आरंभ हो गये।

उधर 1 सितंबर, 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ हुआ तो इंग्लैंड ने लोकतंत्र और स्वाधीनता की रक्षा के नाम पर भारतीय जनता की सहमति के बिना भारत की ओर से जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी, किंतु भारतीय नेताओं ने इसका जबरदस्त विरोध किया और कांग्रेस ने 14 सितंबर, 1939 को एक प्रस्ताव पारित करते हुए कहा कि 'जब तक भारत को स्वतंत्रता का आश्वासन नहीं दिया जाता, तब तक कांग्रेस भारतीय जनता को देश की सरकार से युद्ध में पूर्ण सहयोग की सलाह नहीं दे सकती।' तब अंग्रेजी सरकार द्वारा कुल मिलाकर यह कहा गया कि युद्ध समाप्त होने के बाद ही भारत की किसी मांग पर विचार किया जाएगा। इस पर कांग्रेसी मंत्री मंडलों ने विरोध में त्यागपत्र दे दिया और प्रांतों का शासन गवर्नरों के पास चला गया।

उधर दूसरे विश्व युद्ध में ब्रिटेन की स्थिति अत्यंत खराब हो चुकी थी। ब्रिटेन की संकट की घड़ी को देखते हुए गांधीजी ने कहा कि हम ब्रिटेन के विनाश के द्वारा अपनी स्वतंत्रता नहीं चाहते और कांग्रेस ने कुछ शर्तों के साथ ब्रिटेन को युद्ध में सहयोग देना स्वीकार किया। किंतु जब 8 अगस्त, 1940 को ब्रिटेन ने कुछ रियायतें देने की बात कही तो कांग्रेस ने उन्हें अस्वीकार कर दिया।

17 अक्टूबर, 1940 को अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ किया और जनता से अपील की कि वे युद्ध में सरकार को किसी प्रकार का सहयोग ना करें। इस सत्याग्रह के आरंभ होने पर अनेक सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। तब भारत से युद्ध के दौरान सहयोग लेने की मंशा से ब्रिटेन सरकार ने क्रिप्स मिशन भारत भेजा किंतु बाद में इस मिशन के प्रस्ताव भी भारतीय आशाओं के अनुकूल नहीं थे, अतः उन्हें भी अस्वीकार कर दिया गया।

देश में क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद जनता में एक प्रकार की निराशा घर करने लगी थी जिसको देखते हुए महात्मा गांधी ने चिंतित होकर 9 अगस्त, 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया। इसके लिये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 4 जुलाई, 1942 को एक प्रस्ताव पारित किया कि अंग्रेज अगर अब भारत नहीं छोड़ते हैं तो उनके ख़िलाफ़ देशव्यापी नागरिक अवज्ञा आंदोलन चलाया जाएगा। इस प्रस्ताव को लेकर पार्टी में कुछ लोग इस प्रस्ताव के पक्ष में नहीं थे। इसी की वजह से कांग्रेसी नेता चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने कांग्रेस पार्टी छोड़ दी। पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आजाद आदि नेता इस प्रस्ताव के बारे में कोई फैसला नहीं कर पा रहे थे किंतु बाद में उन्होंने गांधीजी के आह्वान पर समर्थन देने का निर्णय ले लिया। सरदार वल्लभभाई पटेल, अशोक मेहता, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं ने इस आंदोलन का खुल कर समर्थन किया।

8 अगस्त, 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के मुंबई अधिवेशन में 'भारत छोड़ो' आंदोलन का प्रस्ताव पारित किया गया और अगले दिन 9 अगस्त को यह आंदोलन आरंभ हो गया । महात्मा गांधी ने अपने भाषण में कहा था कि 'करो या मरो' : मंत्र से तात्पर्य यह है कि या तो हम भारत को आजादी दिलाएंगे अथवा अपने प्राणों का उत्सर्ग कर देंगे। अब हम देश को परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़े हुए देखने के लिए जीवित नहीं रहना चाहते हैं।'

प्रश्न यह है कि महात्मा गांधी इस समय ब्रिटिश साम्राज्य से भारत को स्वतंत्र कराने के लिए किस तरह का आंदोलन करना चाहते थे ? यह आंदोलन वह सत्याग्रह के आधार पर दृढ़ किंतु निष्क्रिय प्रतिरोध और सविनय अवज्ञा के रूप में करना चाहते थे। इस आंदोलन को पूर्णतया अहिंसात्मक रूप में करना चाहते

थे। उनका अहिंसा पर बहुत जोर था। उनका कहना था कि इस आंदोलन का उद्देश्य भारत को केवल स्वतंत्र कराना नहीं है बल्कि स्वतंत्रता के बाद देश की जनता सत्ता जिसे चाहे सौंपे क्योंकि लोकतंत्र में सत्ता जनता में निहित रहती है। यह आंदोलन महात्मा गांधी जी के लिए जीवन – मरण का प्रश्न बन गया था। उन्होंने कहा था, 'मैं स्वतंत्रता के लिए अब आगे और प्रतीक्षा नहीं कर सकता। मैं जिन्ना के हृदय परिवर्तन की प्रतीक्षा नहीं कर सकता। यदि मैं अब रुकूंगा तो ईश्वर मुझे दंड देगा। यह मेरे जीवन का अंतिम संघर्ष है।'

इस आंदोलन में कम्युनिस्ट पार्टी ने अंग्रेजों का समर्थन किया, क्योंकि वे सोवियत संघ के साथ संबद्ध थे। मुस्लिम लीग ने अलग देश बनवाने के चक्र में अंग्रेजों का साथ दिया और हिंदू महासभा ने खुले तौर पर भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध किया क्योंकि उन्हें इस बात की आशंका थी कि इस आंदोलन से देश में आंतरिक अव्यवस्था पैदा हो जायेगी और युद्ध के दौरान आंतरिक सुरक्षा और अधिक खतरे में पड़ जायेगी।

भारत छोड़ो आंदोलन आरंभ होते ही महात्मा गांधी को गिरफ्तार कर लिया गया और कांग्रेस वर्किंग कमिटी के सभी सदस्यों को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

इस आंदोलन में गांव पंचायत से लेकर जिला पंचायत और आम लोग आगे आये। कई लोगों ने अपनी नौकरियां छोड़ दी और छात्रों ने कॉलेज छोड़ दिये। इस आंदोलन में 940 भारतीय मारे गये और 1040 घायल हुए तथा साठ हजार लोगों को बंदी बना लिया गया। चूंकि बहुत सारे नेता गिरफ्तार कर लिये गये थे तो आंदोलन में आंदोलनकारियों को दिशा देने के लिए बहुत कम लोग बचे थे, हालांकि अनेक नेता भूमिगत हो अपनी भूमिका निभा रहे थे। अंग्रेजों ने इस अहिंसक आंदोलन को क्रूर हिंसा से दबाने की कोशिश की। इस आंदोलन में महात्मा गांधी जैसे नेतृत्व करने वाले नेता जेल में थे अतः बहुत सारी हिंसक घटनाएं भी हुई और सरकारी सम्पत्ति को तोड़ा फोड़ा गया या जला दिया गया।

यद्यपि भारत छोड़ो आंदोलन अपने मूल लक्ष्य भारत से ब्रिटिश शासन की समाप्ति को तात्कालिक रूप से प्राप्त नहीं कर सका लेकिन इस आंदोलन ने भारत की जनता में एक ऐसी अपूर्व जागृति उत्पन्न कर दी जिससे ब्रिटेन के लिए भारत पर लंबे समय तक शासन कर सकना संभव नहीं रह गया था। इस आंदोलन से उत्पन्न चेतना के परिणाम स्वरूप 1946 ईस्वी में जल सेना का विद्रोह हुआ जिसने भारत में ब्रिटिश शासन पर और भयंकर चोट की और इस आंदोलन तथा कुछ अन्य तत्वों के परिणाम स्वरूप युद्ध के बाद अंग्रेजों का अब भारत में टिकना कठिन हो रहा था। साथ ही अमेरिका तथा इंग्लैंड में लोकमत इतना अधिक भारत के पक्ष में हो गया कि इंग्लैंड को विवश होकर भारत छोड़ना पड़ा। इस प्रकार यह निश्चित तथ्य है कि भारत छोड़ो आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता के लिए एक निश्चित और पुख्ता पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी। इस संबंध में यह भी कहा जा सकता है कि यह निर्विवाद सत्य है कि भारतीय स्वतंत्रता की पृष्ठभूमि भारत छोड़ो आंदोलन ने ही तैयार की जिसके कारण 5 वर्ष बाद ही भारत को स्वतंत्रता मिल गई। डॉ. सुभाष कश्यप ने अपनी पुस्तक 'संवैधानिक विकास और भारत का स्वतंत्रता संघर्ष' पुस्तक में लिखा है कि '1942 का भारत छोड़ो आंदोलन सचमुच सन् 1857 की असफल क्रांति के बाद भारत में अंग्रेज राज की समाप्ति के लिए किया गया सबसे बड़ा प्रयास था।'

भारत 1947 में अंग्रेजी साम्राज्य से तो आजाद हो गया परंतु उसकी अखंडता खंडित हो गई। भारत के दो टुकड़े कर उससे एक नया देश पाकिस्तान बना दिया गया और फिर शुरू हुआ बीसवीं सदी की सबसे बड़ी त्रासदी, देश विभाजन के कारण बहुत बड़े पैमाने पर जनसंख्या की अदला बदली और उसके भयंकर परिणाम। खैर, भारत के दो टुकड़े अवश्य हुए पर आजादी मिल गई।

यह राजनीतिक आजादी तो मिल गई परंतु गुलामी की मानसिकता से अभी भी हम पूरी तरह आजाद नहीं हुए हैं। हम लाखों शहीदों के बलिदान के महत्व को भूल रहे हैं। शहीदों के बलिदान से मिली इस आजादी का मूल्य हमें समझना होगा और हमें जाति–पाति, मजहबों तथा अन्य संकीर्ण स्वार्थों से उपर उठ कर अपने राष्ट्र को अधिक मान – सम्मान देना होगा। हमारे वेद पुराण तथा धर्म ग्रंथ सदियों से मातृभूमि की महिमा का बखान करते रहे हैं यथा –

'जननी–जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात् जननी (माता) और जन्मभूमि का स्थान स्वर्ग से भी श्रेष्ठ एवं महान है। माता का प्यार, दुलार व वात्सल्य अतुलनीय है। इसी प्रकार जन्मभूमि की महत्ता हमारे समस्त भौतिक सुखों से कहीं अधिक है।

आओ, हम अपनी जन्मभूमि भारत माता का सम्मान करें, उसी के लिए जियें, उसी के लिए मरें।

जय भारत, वंदेमातरम्।

अगर आप अपनी गलतियों के लिए खुद लड़ते हैं, तो इसका अर्थ यह है कि आपको कोई हरा नहीं सकता।

15 अगस्त पर विशेष

अमृत महोत्सव और लहराता तिरंगा

सुजाता प्रसाद

लेखिका,
शिक्षिका सनराइज एकेडमी
मोटिवेशनल ओरेटर
नई दिल्ली

आज विश्व भारत को अग्रणी राष्ट्र व महाशक्ति के रूप में देखता है। 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश आजाद हुआ था और 15 अगस्त, 2022 को देश की आजादी के 75 वर्ष पूरे हो गए। इस अमृत बेला को 12 मार्च 2021 से शुरू कर 15 अगस्त 2023 तक मनाने का निश्चय किया गया। तब से लेकर इस राष्ट्रीय महापर्व के 'हीरक जयंती' का आयोजन देश के विभिन्न प्रदेशों, प्रांतों, महानगरों, नगरों, जिलों एवं सूदूर ग्रामीण क्षेत्रों में हर्षोल्लास के साथ लगातार किया जा रहा है।

किसी भी राष्ट्र के लिए राष्ट्रीय ध्वज उसका अभिन्न अंग है, उसकी पहचान है। बच्चे, बड़े हम सभी के लिए तिरंगा हमारे देश की आन, बान और शान है। स्वतंत्रता से पहले भारत के राष्ट्रध्वज के अनेकानेक रूप रहे हैं। 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा में तिरंगा को राष्ट्रीय ध्वज स्वीकार किया गया था। इसीलिए उसके बाद से 22 जुलाई को देश में 'तिरंगा दिवस' मनाया जाता है।

भारत का राष्ट्रीय ध्वज तीन रंगों की क्षैतिज पट्टियों के मध्य नीले रंग के एक चक्र के साथ सुशोभित है। ध्वज संहिता के अनुसार तिरंगा ध्वज के तीनों रंग समान अनुपात में होते हैं और तिरंगा दो अनुपात तीन (2:3) में होता है अर्थात इसकी लंबाई, चौड़ाई का डेढ़ गुना होती है।

हम जानते हैं राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा में तीन रंग होते हैं केसरिया, सफेद और हरा। तिरंगे में केसरिया रंग शक्ति और बलिदान का, सफेद रंग शांति और सत्य का और हरा रंग समृद्धि एवं संपन्नता का प्रतीक है। ध्वज के मध्य में चौबीस तीलियों के साथ गहरे नीले रंग का पहिया होता है जो प्रगति और गतिशीलता का प्रतीक है। ध्वज की सफेद पट्टी के बीच में अशोक चक्र का गहरा नीला रंग आकाश और महासागर के रंग का प्रतिनिधित्व करता है जो ब्रह्माण्ड के शाश्वत सत्य का प्रतीक है तो चक्र की चौबीस तीलियां मनुष्य के चौबीस गुणों को दर्शाती हैं।

राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस पर देश के माननीय प्रधानमंत्री महोदय द्वारा ध्वजारोहण होता है और गणतंत्र दिवस पर देश के प्रथम नागरिक और संवैधानिक प्रमुख माननीय राष्ट्रपति महोदय तिरंगा झंडा फहराते हैं।

झंडोत्तोलन की भी अपनी प्रक्रिया होती है जिसे 15 अगस्त और 26 जनवरी के दिन अलग–अलग तरीके से अपनाया जाता है। 15 अगस्त यानी स्वतंत्रता दिवस के मौके पर राष्ट्रीय ध्वज को नीचे से रस्सी द्वारा खींच कर ऊपर ले जाया जाता है और फिर खोल कर फहराया जाता है, जिसे 'ध्वजारोहण' (Flag Hoisting) कहते हैं। जबकि 26 जनवरी यानि गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडा ऊपर ही बंधा रहता है, जिसे खोल कर फहराया जाता है, जिसे 'झंडा फहराना' (Flag Unfurling) कहते हैं।

भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के अवसर पर अमृत महोत्सव मनाने का अनुमोदन देश के वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा किया गया है। दरअसल 'आजादी का अमृत महोत्सव' देश की समृद्धि के लिए लिया गया एक संकल्प है, देश के महान स्वतंत्रता सेनानियों और उनके बलिदान के योगदान को श्रद्धा सुमन अर्पित करने का अमृत काल है, आत्मनिर्भर भारत की तस्वीर दिखाने का दृढ़ प्रण है। अमृत महोत्सव पर लहराता तिरंगा देश की खुशी का द्योतक है।

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर, स्वतंत्रता दिवस के इस शुभ अवसर पर पूर्व प्रधानमंत्री आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी की कविता की चंद पंक्तियां याद करना देश को समर्पित एक सच्ची प्रार्थना होगी, जो पोर पोर देश प्रेम में सराबोर हैं –

भारत सिर्फ जमीन का टुकड़ा नहीं,
जीता जागता राष्ट्रपुरुष है।
यह चन्दन की भूमि है,
अभिनन्दन की भूमि है।
यह तर्पण की भूमि है,
यह अर्पण की भूमि है।
इसका कंकर–कंकर शंकर है,
इसका बिन्दु बिन्दु गंगाजल है।
हम जियेंगे तो इसके लिये,
मरेंगे तो इसके लिये।
और मरने के बाद भी गंगाजल में
बहती हुई हमारी अस्थियों को कोई
कान लगाके सुनेगा तो
एक ही आवाज आएगी
भारत माता की जय।

हम इस प्यारे वतन के रखवाले हैं

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
उत्तर प्रदेश

हम हिंदवासी, इस प्यारे वतन के मतवाले हैं, रखवाले हैं,
देश के आन, बान, शान पर संकट हो, तो मिटने वाले हैं।
अपने बदन का लहू बहाकर, जो देश को कराए आजाद,
ऐसे वीरों का अभिनंदन, हम नित शीश झुकाने वाले हैं।।

हमारी ओर प्रेम का पींग बढ़ाए, उसके लिए दिलवाले हैं,
हम सबके लिए सद्भाव व सौहार्द्र का भाव रखने वाले हैं।
हम तो चाहते संपूर्ण विश्व में, बस! अमन चैन कायम हो,
हमसे जो ईर्ष्या द्वैष रखता, उसे भी प्यार करने वाले हैं।।

बार–बार जो हमें धमकाता, उसे पहले समझाने वाले हैं,
प्यारे वतन के लिए हम तो, अपना सिर कटाने वाले हैं।
इस पावस भू पर हमने जन्म लिया, जिसका हमें गर्व है,
देश के लिए हम अपने प्राण का, बलिदान करने वाले हैं।।

हम सबकी खैर मनाते, न किसी की बुराई करने वाले हैं,
हम तो नफरत के बदले भी, प्रेम का संदेश देने वाले हैं।
जन–जन में खुशियाँ छाई हो, प्रगति व उन्नति हो सर्वत्र,
हम बुद्ध बनकर सारे जग का, कल्याण करने वाले हैं।।

जो मुश्किलों में हमारा साथ दे, हम उसे न भूलने वाले हैं,
जो दोस्त बन साथ में रहें, हम भी फर्ज निभाने वाले हैं।
गाँधी जी के सत्य, अहिंसा व सत्याग्रह के हम अनुयायी,
पर देश पर जो आँख उठाए, हम उसे न छोड़ने वाले हैं।।

जीवों के प्रति प्रेम को प्रदर्शित करता त्योहार नाग पंचमी

श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा
उपसम्पादक (अध्यात्म संदेश)
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
राजकीय विद्यालय, लखनऊ

हमारी भारतीय संस्कृति की आधारशिला सामाजिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय त्योहारों से ओतप्रोत है इसकी धारणा है कि संसार के कण कण में भगवान बसे हैं, यही कारण है कि प्रकृति प्रदत्त नदी, पर्वत, वृक्ष एवं जीव जन्तु सभी पूज्यनीय हैं। इसी कड़ी में नाग एवं सर्प जो कि शिव जी का श्रृंगार भी हैं, के सम्मान में नाग पंचमी का पर्व बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। यह हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध त्योहार है क्योंकि नाग हमारी संस्कृति का अहम हिस्सा हैं। नागों को धारण करने वाले भगवान भोलेनाथ की पूजा–आराधना करना भी इस दिन विशेष रूप से शुभ माना जाता है। इन्हें शक्ति एवं सूर्य का अवतार भी माना जाता है। हमारे देश में नाग पूजा प्राचीनकाल से ही चली आ रही है। श्रावण माह के शुक्ल पक्ष में पंचमी को नाग पंचमी के रूप में मनाया जाता है इसलिए इसे 'नाग पंचमी' के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त है। इस दिन नागों का दर्शन–पूजन बहुत शुभ माना जाता है।इस पर्व को मनाने की एक पौराणिक कथा भी प्रचलित है जो कि इस प्रकार है।

'एक समय लीलाधर नाम का एक किसान था जिसके तीन पुत्र तथा एक पुत्री थी। एक दिन सुबह जब वह अपने खेत में हल चला रहा था, उसके हल से सांप के बच्चों की मौत हो गई। अपने बच्चों की मौत को देखकर नाग माता को काफी क्रोध आया और नागिन अपने बच्चों की मौत का बदला लेने किसान के घर गई, रात को जब किसान और उसका परिवार सो रहा था तो नागिन ने किसान, उसकी पत्नी और उसके बेटों को डस लिया और सभी की मौत हो गई। किसान की पुत्री को नागिन ने नहीं डसा था जिससे वह जिंदा बच गई। दूसरे दिन सुबह नागिन फिर से किसान के घर में किसान की बेटी को डसने के इरादे से गई मगर उसने देखा कि उस बेटी ने नाग माता को प्रसन्न करने के लिए कटोरा भरकर दूध रख दिया तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना की और माफी मांगी। उसने नागिन से उसके माता–पिता को माफ कर देने की प्रार्थना की फलस्वरूप नाग माता प्रसन्न हुई तथा सबको जीवनदान दे दिया। इसके अलावा नाग माता ने यह आशीर्वाद भी दिया कि श्रावण शुक्ल पंचमी को जो महिला सांप की पूजा करेगी उसकी कई पीढ़ियां सुरक्षित रहेंगी, तब से नाग पंचमी पर सांपों की पूजा का विधान है।

नाग पंचमी का पर्व मनाने के लिए सुबह जल्दी स्नान करके धुले हुए कपड़े साफ और स्वच्छ कपड़े पहन कर पूजा की जाती है। दीवार पर गेरू पोतकर पूजन का स्थान बनाया जाता है। घर के प्रवेश द्वार पर नाग का चित्र बनाया जाता है तथा उनकी पूजा की जाती है। नागदेव की सुगंधित पुष्प, कमल व चंदन से ही पूजा करनी चाहिए, क्योंकि नागदेव को सुगंध प्रिय है। ब्राह्मणों को भोजन व खीर परोसी जाती है व सांप को भी अर्पण की जाती है। उसके बाद इस खीर को प्रसाद के रूप में स्वयं ग्रहण किया जाता है। यह दिन सपेरों के लिए भी विशेष महत्व का होता है, उन्हें दूध और पैसे दिए जाते हैं।

समाज में एक भ्रम फैला हुआ है कि इस दिन नाग को दूध पिलाने से वे प्रसन्न होते हैं परंतु सच तो यह है कि नाग पंचमी पर नाग को दूध न पिलाएं, क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि नाग को दूध पिलाने से उनकी मौत हो जाती है और मृत्यु का दोष लगकर हम शापित हो जाते हैं। इन दिनों मिट्टी की खुदाई पूरी तरह से प्रतिबंधित रहती है। माना गया है कि नाग का फन तवे के समान होता है। नाग पंचमी के दिन तवे को चूल्हे पर चढ़ाने से नाग के फन को आग पर रखने जैसा होता है इसलिए इस दिन कई स्थानों पर तवा नहीं रखा जाता।

भारतीय संस्कृति में नागों का बहुत महत्व है परन्तु दुःख का विषय है कि व्यापारिक लाभ के लिए सांपों को मारा और बेचा जाता है। सांपों की खाल, जहर आदि चीजें अंतरराष्ट्रीय बाजार में बेची जाती हैं। यही वजह है कि सरकार और वन्य, जीव–जंतु विभाग द्वारा सांपों को पकड़ने, उन्हें दूध पिलाने पर रोक लगाई जाती है। इसके अलावा भी सरकार की तरफ से सांपों व अन्य जीवों को संरक्षित करने, उन्हें जीवनदान प्रदान करने हेतु कई उपाय और निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

नाग पंचमी के इस पावन त्योहार पर हमें नागों एवं सर्प जाति को बचाने का संकल्प लेना चाहिए अथवा संकल्प लेकर इस त्योहार को मनाने की एक पहल करनी चाहिए कि आगे से हम किसी भी ऐसे उत्पाद का इस्तेमाल नहीं करेंगे जिसमें सर्प की चमड़ी का प्रयोग हुआ हो। इतना ही नहीं, हम यह भी ध्यान रखें कि किस तरह हम नागों व सर्प जाति को सुरक्षित रखकर हम अपनी संस्कृति को कायम रख सकें, उसका मान बढ़ा सकें और निरंतर जीव–जंतुओं पर होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए जागरूकता रखनी चाहिए।

ईमानदारी एक महंगी शौक है, जो हर किसी के बस की बात नहीं।

श्रीमती शोभा रानी तिवारी
इंदौर, मध्य प्रदेश

आज हर्षित बेला है, पुलकित है तन–मन,
खुशियां लेकर आया है, यह रक्षाबंधन,
सूरज की स्वर्णिम किरणें, मन को भा गई,
भाई बहन का प्यार है, त्यौहार है पवन।

स्नेह का धागा जिसमें, छुपा हुआ है प्यार,
वर्ण, धर्म से ऊपर है, रक्षाबंधन का त्यौहार,
खुशियां बांधी बहना ने भाई की कलाई पर,
प्यार के धागे में बंधा है, यह सारा संसार,
सावन की रिमझिम फुहार संग, सुरभित
चमन खुशियां लेकर आया है यह रक्षा बंधन।

रक्षा का धागा बांध, माथे तिलक लगाती है,
आरती उतारती, और मिठाई भी खिलाती है,
भैया के लंबी उम्र के, लिए दुआएं करती है,
कर्तव्य का बोध करा, मन में विश्वास जगाती
है, कुलदीपक हो इस घर के, भैया तुम्हें
नमन, खुशियां लेकर आया है, यह रक्षाबंधन।

नेक राह पर चलना, सबका आदर करना तुम,
माता–पिता क्रोधित हो जाएं, तो भी चुप रहना
गिरा सको तो वृद्धाश्रम, की दीवार गिरा देना,
तोहफे में मुझको अबकी, यही वचन देना तुम,
सदा करो तुम मात – पिता के चरणों में
वंदन, खुशियां लेकर आया है यह रक्षाबंधन।

आत्म शक्ति एवं योग्यता की अनुभूति

डॉ. अजय शुक्ला
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर, स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर
देवास, मध्य प्रदेश

विश्वसनीय अन्तर्मन : स्वयं के सम्बन्ध में निर्धारित की जाने वाली अवधारणा का आधारभूत स्वरूप प्रायः आत्मशक्ति की गहन अनुभूतियों से होकर गुजरता है। जीवन की विभिन्न स्थितियों का अध्ययन करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि निजी स्तर पर की जाने वाली अधिकांश विवेचनाएँ सामान्यतः स्वयं के साक्षात्कार से सम्बद्ध होती हैं। किसी व्यक्ति विशेष के संदर्भ में जब योग्यता का आँकलन किया जाता है तब मूल्यांकन का स्वरूप, बौद्धिक क्षमता की उपस्थिति और उसकी उपयोगिता से सुनिश्चित किया जाता है। विश्वसनीयता के संदर्भ मे स्वयं की शक्तियों का ज्ञान जब बोध के स्तर पर अनुगमन कर लिया जाता है तब व्यावहारिक जीवन में पुरूषार्थ की ओर अग्रसर होते हुए योग्यता को सिद्ध किया जा सकता है। मानवीय उपलब्धियों का प्रस्तुतीकरण सामान्यतः मानसिक क्रियाविधियों से जुड़ी स्थितियों और उनके अनुमानित परिणामों को ध्यान में रखकर किया जाता है। भौतिक स्तर पर दृष्टिगत् एवं अनुभवजन्य व्यावहारिक उदाहरण का ठोस स्वरूप जब निजी और सार्वजनिक स्वीकारोक्ति का आधार बन जायेगा तब आत्मशक्ति की प्रासंगिकता के लिए चुनौतिपूर्ण दायित्व की संभावनाएँ स्वमेव निर्मित होने लगेंगी। व्यक्तिगत् जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण का विकसित स्वरूप दीर्घकालीन अवस्था तक तभी कारगर सिद्ध हो सकता है जबकि आत्मशक्ति एवं योग्यता की अनुभूति व्यवहार के धरातल पर परिलक्षित होते हुए नवीन मानदण्डों को स्थापित करने में अपना योगदान निरूपित कर सके। आत्मशक्ति का विकेन्द्रित पक्ष, विभिन्न क्षेत्रों के अन्तर्गत् अपनी भूमिका निभाने में उस समय सक्षम हो पाता है जब विरोधाभासी स्थितियों में योग्यता की अनुभूति गतिशीलता के साथ व्यक्तिगत् एवं सामूहिक रूप से प्रत्युत्तर के अपेक्षित यथार्थ प्रस्तुत करने में समर्थ हो जाये। स्वयं के प्रति निष्ठा का बोध व्यक्ति अथवा व्यवस्था से जुड़ा होता है जिसके उजले परिदृश्य में आत्मशक्ति कार्यरत रहती है भले ही हम उसे एक निश्चित योग्यता से जोड़कर अनुभूति की विविधता तक पहुँचाने का प्रयास करते रहते हैं। सामान्य जगत् में मानवीय अभिलाषाएँ वर्तमान की बजाये भविष्य के संदर्भ में पोषित

की जाती हैं जिसमें केवल आशातीत सफलता के ताने-बाने की गुंजाईश हुआ करती है।

जीवन में कर्म क्षेत्र को प्रधानता आखिर किन स्थितियों तक प्रदान की जाये यह मनोवैज्ञानिक अध्ययन की विषयवस्तु हो सकती है लेकिन पुरूषार्थ के बल से गरिमामयी अवस्था की प्राप्ति होना आत्मशक्ति एवं योग्यता के द्वारा ही संभव हो सकता है। आत्मबल के द्वारा दीर्घकालीन अवस्था तक स्वयं की साधना को एक सुनिश्चित साध्य के लिये समर्पित किया जाये तो निश्चित ही भविष्य की उज्जवलता को भाग्योदय के संदर्भ में क्रियान्वित किया जा सकता है। अन्तर्मन की सात्विकता का विश्वसनीय आधार आखण्डता से युक्त होकर पराभौतिक के लिये सदा पुरूषार्थ भाव से मानव की आत्मशक्ति के सजृन को स्वीकार करते हुए गतिशील बना रहता है।

निष्ठापूर्ण प्रवृत्ति : मानवीय संवेदनाओं की विभिन्न स्थितियों का विश्लेषण इस बात को स्पष्ट कर देता है कि व्यावहारिक जीवन में उतार-चढ़ाव की गतिशीलता के कारण निष्ठा में परिवर्तन होना स्वाभाविक होता है। यदि किन्ही परिस्थितियों के अन्तर्गत् कुछ सामान्य अथवा विशिष्ठ प्राप्त हो गया तो उन स्थितियों की परिणिति के आधार पर निष्ठा का निर्धारण हो जाना सहज मनोदशा का वास्तविक प्रमाण है। एक निश्चित परिदृश्य के प्रति किसी आग्रह की स्थिति उस अवस्था को पुनः प्रतिपादित कर देने की मंशा से अभिप्रेरित होती है जहाँ शेष को प्राप्त कर लेने का नैसर्गिक आकर्षण अपना कार्य संपादित करता रहता है। सामान्तः जीवन की आँकाक्षाओं के बोझ तले आस्था की मूलभूत प्रवृत्ति अपनी सहभागिता पूर्ण करते हुए स्वयं को धन्य समझने का भ्रम दीर्घक. ालीन अवस्था तक बनाये रखती है। मानसिक धरातल पर कार्य एवं कारण के अन्तर्सम्बन्धों की विश्लेषाणात्मक समझ व्यक्तिगत् जीवन शैली में क्राँतिकारी बदलाव का जिम्मेदार घटक होती है। प्रायः लघु एवं वृहद स्तर पर किसी निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु विविध उपक्रम किये जाते हैं जिससे अपेक्षा के अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिणामों की प्राप्ति संभव हो पाती है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन यह बताते हैं कि व्यक्तिगत् जीवन के संदर्भ में जितनी भी स्थूल एवं सूक्ष्म प्राप्तियाँ सुनिश्चित हो पाती हैं लगभग इन्हीं स्थितियों के आधार पर किया गया मूल्याँकन, आस्था के निर्धारण का कारण बन जाया करता है। वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में चिन्तनशील क्रियाविधियों के अर्न्तगत् प्रविष्ट हो गयी एकाँगी विचारधारा का स्वरूप व्यापकता को संकुचित करते हुए निष्ठा के मानदण्डों को आज आहत कर चुका है। किसी भी व्यवस्था के अन्तर्गत् आदर्श स्थितियों के निर्माण हेतु प्रयास की आवश्यकता होती है लेकिन यह पूर्णतः क्रियान्वित होने की दशा में परिवर्तित हो जाएगा इसकी केवल आस्था के साथ आशा की जा सकती है। जब कार्य एवं व्यवहार के निर्धारण और घटित होने की स्थितियों को निष्ठा से जोड़कर व्यावहारिक जीवन की प्रासंगिकता का अध्ययन किया जाता है तब विचलित अवस्था के निर्मित होने की संभावनाएँ बढ़ जाया करती हैं। कर्मगत् व्यवस्थाओं का उल्लेखनीय स्वरूप सामान्यतः व्यक्तिगत् मनोबल में वृद्धि कर दिया करता है जिसके परिणाम अनुकूलता से युक्त हुआ करते हैं जिसमं प्रारम्भिक आस्था का अभ्युदय अपनी कारगर भूमिका में सिद्धस्त होता है। आत्मशक्ति का आभास व्यावहारिक जीवन की चेतना को सम्बल प्रदान कर देता है जो अन्ततः सफलता एवं असफलता के बावजूद भी व्यक्तिगत् निष्ठा को न्यूनतम् स्तर पर जाने नहीं देता है। संकल्प के साथ अग्रसर होने की प्रवृत्ति इस बात का प्रमाण है कि व्यक्ति के द्वारा स्वयं की सकारात्मक उर्जा को अनुभव करते हुए कर्मक्षेत्र के सिद्धांतों का अनुपालन, समर्पण एवं निष्ठा से कार्य संपादन हेतु किया गया है।

आशातीत सफलता : आत्मशक्ति का व्यावहारिक स्वरूप प्रत्यक्ष रूप से व्यक्तिगत् अथवा सामाजिक परिवेश में मनोवांक्षित सफलता का मुख्य कारक होता है। जब जीवन में योग्यता के साथ इच्छाशक्ति का समावेश हो जाता है तब निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करना असंभव नहीं रह जाता है। कई बार सकारात्मक अनुभूतियाँ व्यक्तिगत् अभिलाषा को सृजनात्मक स्वरूप में परिवर्तित करने के लिए प्रेरित करती हैं जिसके परिणाम कर्मगत् स्थितियों को व्यावहारिक बनाने में सहयोगी बन जाया करते हैं। सामान्य रूप से वृहद सफलता प्राप्त करने के साथ-साथ अत्यन्त लघु स्तर पर निर्धारित किये गये कार्य और उनसे जुड़ी सफलताएँ व्यक्तिगत् अभिप्रेरणा का मुख्य स्रोत होती हैं। हाँलाकि मानवीय स्वभाव स्वयं के तर्कों को अधिक महत्व प्रदान करते हुए उच्च स्तर की योजनाओं पर कार्य करने की इच्छा रखता है तथा शेष स्थितियाँ को प्रायः वह स्थगित कर दिया करता है। जीवन में सफलता के प्रति आन्तरिक आस्था को बनाये रखने का सर्वाधिक लाभ यह रहता है कि व्यक्ति के द्वारा विरोधाभासी स्थिति निर्मित होने पर भी वह कार्य एवं कारण पर पुनर्विचार हेतु अपनी मनःस्थिति को गतिशील अवस्था में रखता है। आस्था के संदर्भ में व्यावहारिक दृष्टि से विचार करने पर प्रायः यह ज्ञात हो जाता है कि व्यक्तिगत् सोच के कारण किसी क्षेत्र विशेष मे कुछ प्राप्त करने की चाहत ने आस्था का निर्माण किया होगा जिसके परिणामस्वरूप निजी प्रयास की विभिन्न स्थितियाँ आज परिलक्षित हो रहीं है। इस परिप्रेक्ष्य का निष्पक्ष विश्लेषण करने पर व्यक्ति में आत्मविश्वास की स्थिति का प्रकटीकरण होने के अलावा कार्य की पूर्णता हेतु स्वयं पर आस्था की स्पष्ट अनुभूति सहजता की जा सकती है। व्यक्ति के द्वारा जब परिवार एवं समाज के सम्मुख यह अभिव्यक्त किया जाता है कि 'मैं यह कार्य कर सकता हूँ' तब विश्वास की स्थिति निर्मित होती है फलतः वातावरण में सकारात्मकता पुट विद्यमान हो जाता है।

स्वयं के बारे में प्रकट तथ्य हेतु विभिन्न परिस्थितियों के अन्तर्गत् कार्यरत् व्यक्ति भले ही दबाव अथवा तनाव को मुख्य घटक स्वीकार करते हुए अपनी बात कह दें, लेकिन मनोवैज्ञानिक अध्ययन इस पुष्टि को अर्न्तमन की निष्ठा और सफलता के प्रति आत्मविश्वास की स्थिति को महत्व प्रदान करते हैं। किसी एक विचार से प्रेरित अन्तःकरण जब स्वयं का मूल्याँकन पूरी ईमानदारी से करने का प्रयास करता है तब आशा के अनुकूल कार्य स्थिति में सफलता अर्जित करने की चाहत सम्पूर्ण सर्मपण से संभव हो पाती है। ज्ञान के विविध पक्षों को आत्मशक्ति के द्वारा फलीभूत करने की योग्यता, व्यक्ति के जीवन में सफलता बनकर प्रविष्ठ करती है जो

समयानुसार आस्था के द्वारा प्रकट होती रहती है।

गरिमामयी अवस्था : व्यक्तिगत् जीवन में स्वयं की स्थिति को सम्मानजनक बनाने के लिए अन्तर्जगत् की शक्तियों को जागृत करना आवश्यक होता है। सामान्य रूप से कर्मक्षेत्र का निर्धारण हो जाने पर एक वृहद संतोष की अनुभूति होती है क्योंकि व्यक्ति के द्वारा इस मान्यता को पूर्ण समर्थन प्राप्त हो जाता है जिसमें योग्यता के अनुसार किसी विशेष कार्य के चयन की बात कही जाती है। इस तथ्य में कोई दो मत नहीं है कि व्यक्ति के माध्यम से अपने लक्ष्य का निर्माण पूर्ण आस्था के साथ किया जाता है जिसमें अन्तर्मन की अभिलाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जीवन में कुछ कर गुजरने के लिए मूलभूत आधार की उपस्थिति लगभग सभी व्यक्तियों में होती है लेकिन इसकी वास्तविक पहचान एवं उसका उपयोग प्रायः सभी लोग नहीं कर पाते हैं। आन्तरिक अभिलाषा को भविष्य के संदर्भ में देखने की चेष्ठा करना व्यक्ति का स्वभाव होता है तथा जब उसके द्वारा व्यावहारिक जगत् में क्रियमाण की स्थिति निर्मित होती है तब वह स्वयं को गरिमामय अवस्था के अन्तर्गत् सुरक्षित महसूस करता है। जीवन की गतिशीलता में विशिष्ट दृष्टिकोण की सत्ता को अर्न्तमन की चाहत से सम्बद्ध करके कर्म के मानदण्ड सुनिश्चित करना स्वयं के प्रति सकारात्मक दृष्टि का सात्विक परिणाम होता है। व्यक्तिगत् तौर पर कार्यक्षेत्र के प्रति सजगता पूर्ण व्यवहार कर आशय केवल नियमित कार्यपूर्णता की स्थिति नहीं होती बल्कि उमंग–उत्साह के साथ कर्मगत् व्यवहार का कुशलता से किया गया संपादन होता है। जब सामान्य व्यवहार के अन्तर्गत् अपनी मनःस्थिति पर सहजता से नियन्त्रण स्थापित होने लगता है तब व्यक्ति को यह समझ में आने लगता है कि आत्मशक्ति का योगदान किस स्तर तक होता है। कई बार स्वयं की योग्यता पर व्यक्तिगत् जीवन में प्रश्नवाचक स्थितियों का उत्पन्न होना किसी आश्चर्य से कम नहीं होता क्योंकि कर्मगत् व्यवहार का मूल्यांकन आत्मशक्ति को केन्द्र में रखते हुए विभिन्न स्थितियों का विश्लेषण करने से वास्तविकता पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है।

यदि निजी स्तर पर विरोधाभासी स्थितियों के बावजूद भी यह दावा किया जाए कि मेरे द्वारा एक निश्चित आस्था के तहत सम्पूर्ण व्यवहार को प्रतिपादित किया गया है उस समय आत्शक्ति एवं योग्यता की अनुभूतियों पर एक नई चुनौती प्रकट होने की संभावना बढ़ जाया करती है। व्यावहारिक जीवन की गतिशील प्रवृत्तियों का अध्ययन व्यक्ति को यह समझाने में सक्षम होता है जिसके अन्तर्गत् कर्मगत् व्यवहार का स्वरूप तय किया जाता है और जिस स्थान एवं स्थिति तक पहुँचने की अभिलाषा होती है उसके अनुसार पुरूषार्थ को आत्मसात् किया जाता है। प्रायः श्रेष्ठता की ओर प्रस्थान की स्थितियाँ समाज में कम उजागर होती हैं, इसलिए व्यक्तिगत् धारणा पुरूषार्थ को प्रबल बनाने की नहीं बन पाती है जिसके परिदृश्य में कुछ विशेष प्राप्त न करने की अभिलाषा मुख्य घटक होती है।

उज्जवल भविष्य : सृष्टि पर कर्म और भाग्य का अर्न्तद्वन्द पुरातनकाल से गतिमान है तथा इस विरोधाभास को न्यूनतम करने की पहल आज भी जारी है परन्तु विभिन्न मत–मतान्तर के मध्य इससे जुड़े प्रसंग अब सामान्य होते जा रहे हैं। यदि मनोकामना की पूर्ति हो जाती है तो अर्शीवाद की स्थितियों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हो जाती है इसके विपरीत कुछ घटित होने पर कोसने की प्रवृत्तियाँ तीव्र गति से मुखरित होने लगती हैं। जीवन की व्यावहारिकता हेतु आत्मशक्ति के साथ स्वयं की योग्यता को अनुभति के स्तर तक पहुँचाने का प्रयास कर्म की सुदृढ़ता को रेखाँकित करता है। जब भविष्य में स्वयं को स्थापित करने की मनोदशा का जन्म होता है तब आस्था को किसी भी स्थिति में बनाये रखते हुए कर्म के प्रतिपादन पर बल दिया जाता है। व्यक्तिगत् जीवन के संदर्भ में अभिलाषा को महत्व प्रदान करते हुए कर्मक्षेत्र का निर्धारण, स्वयं की संतुष्टि से सम्बद्ध स्थिति होती है जिसमें पश्चाताप के लिए कोई स्थान शेष नहीं होता है। मनुष्य को स्वयं के भाग्य का निर्माता मानने के पीछे प्रबल पुरूषार्थ की अवधारणा कार्यरत रहती है भले ही विरोधाभासी स्थितियाँ अपने झंझावात से बाधा पहुँचाने में किसी भी स्तर पर चेष्ठा ही क्यों न कर बैठें। स्वयं के प्रति सात्विक अनुराग की पृष्ठभूमि भाग्य को अपने पक्ष में करने हेतु नित–नूतन प्रयास की सक्षम संभावनाएँ तलाशने में संलग्न होना चाहती हैं जिसे केवल कर्म की व्यावहारिकता के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। एक दूसरे को समझने एवं समझाने की प्रक्रिया में अतीत को आधार बनाकर वर्तमान को सुधारने की बात समझायी जाती है, जिसके अन्तर्गत् भविष्य में बहुत कुछ स्वयं के अनुकूल हो जाने का आश्वासन सम्मिलित रहता है। कई मनोवैज्ञानिक अध्ययन इस तथ्य पर अधिक बल दिया करते हैं जिसमें भूतकाल एवं भविष्य के अनावश्यक दबाव से मुक्त होकर वर्तमान स्थितियों में कर्मगत् प्रयास के अन्तर्गत् आनंदित अवस्था के साथ कार्य करने की स्थिति को स्वीकार करने की बात नीहित होती है। यदि निजी स्तर पर किये जाने वाले पुरूषार्थ को प्रबल बनाने की स्थिति निर्मित करना है तो सर्वप्रथम वैचारिक स्तर पर स्वयं के भाग्य को परिवर्तित करने हेतु सशक्त मनोदशा का निर्माण करने की आवश्यकता होगी। स्वयं के पुरूषार्थ से व्यक्तिगत् के साथ पारिवारिक एवं सामाजिक बदलाव के कई प्रामाणिक उदाहरण एतिहासिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत् परिलक्षित होते हैं जिनसे प्रेरणा ग्रहण करते हुए विभिन्न स्थितियों में आमूलचूल परिवर्तन करने का सफलतम प्रयास किया जा सकता है। इस प्रकार जीवन की व्यापकता को आत्मशक्ति और योग्यता की अनुभूति द्वारा पुरूषार्थ की निरन्तरता से भाग्योदय की उत्पत्ति को संभव बनाया जा सकता है।

जिनके पास बहाने नहीं होते अक्सर वही लोग कामयाब होते हैं ।

स्थायी स्तम्भ

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह
भू-वैज्ञानिक, पर्यावरणविद्
एवं हिन्दी रचनाकार, पटना

पर्यावरण चिन्तन 7

अभी हाल में 'विश्व पर्यावरण-दिवस' पूरे विश्व में जोश-खरोश से मनाया गया। अपना देश पीछे नहीं रहा, अग्रणी भूमिका निभाया। लेकिन इस दिवस के संकल्प को आत्मसात करते किसी में अभी तक स्पष्ट नहीं दिख पाया है। मेरे अभिमत में यह दिवस औपचारिकता का अभिप्राय बन गया। एक दिवसीय समारोह का कार्यक्रम रह गया। मेरा वश चले तो मैं इससे सामूहिकता को हटाकर व्यक्तिगत यज्ञ का अनुष्ठान के रुप में सालोभर की दिनचर्या बना दें।

जरा याद कीजिये, 5 जून 1972 के बाद दिवस की व्यापकता वैश्विक हुई। पर्यावरण का प्रथम उपभोक्ता हम मानव हैं। हजारों विषय के बीच यह 'पर्यावरण' एकमात्र विषय है,जो हमारे जीवन अथवा यों कहें कि समस्त जीवधारियों के जीवन-अस्तित्व से सीधे जुड़ा हुआ है। फिर क्यों यह नजरअंदाज के दायरे में गिरफ्त है? पता नहीं कब और कैसे इसके साथ 'प्रदूषण' आकर जोंक की तरह चिपक गया। प्रदूषण का कारण जनसंख्या-वृद्धि, अवशिष्ट का जनन और प्राकृतिक संसाधन का अतिदोहन है।

हम सभी भलिभाँति जानते हैं कि बूंद-बूंद से एक बड़ा तालाब भरता है। उसी तरह छोटी-छोटी बातें मिलकर बड़े और महत्वपूर्ण मुद्दे बनते हैं। बात यहाँ अवशिष्ट-जनन से प्रारम्भ करते है। अवशिष्ट-जनन का पहला यंत्र हमारा हाथ है। चॉकलेट के रेपर से बड़े से सामानों का रेपर प्लास्टिक ने ले लिया है। हम प्लास्टिक-युग में जी रहे हैं। और प्लास्टिक, खासकर सिंगल यूज प्लास्टिक, जिसका व्यावहारिक नाम पॉलीथिन है, के गुलाम हो गये हैं। एक आँकड़ा ज्ञात में आया है कि दिनभर में प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन 250 से 350 ग्राम अवशिष्ट पैदा करता है, जिसे जाने अनजाने बाहर जहाँ-तहाँ फेंक दिया करते हैं। इस अवशिष्ट में मात्रा के आरोहन में प्लास्टिक/पॉलीथिन कागज, कपड़ा, साग-सब्जी और झारन-बुहारन के होते हैं। ये सभी घरेलू-अवशिष्ट के अन्दर आते हैं।

इनका नियंत्रण और निष्पादन उसी हाथ से कर सकते हैं जिससे जनन करते है। कहने का आशय 'अपना हाथ जगन्नाथ' से है यानि इसका निष्पादन दूसरे के हाथ में छोड़ना हमारी नादानी होगी, और वही हम करते आ रहे हैं। घरेलू-अवशिष्टों के लिये घरेलू प्रबन्धन तकनीकी ज्यादा कारगर साबित हुआ है। प्रथमतः घर पर ही इसका वर्गीकरण करें। तीन 'R' यानि रिड्यूज, रियूज और रिसाइकिल फार्मूला का हमेशा व्यवहार में लायें।

यह भी ज्ञातव्य है कि जीवाश्म ईंधन के जलने से वायु प्रदूषण में वृद्धि होती है और धरती के सुरक्षा-कवच 'ओजोन परत' का ह्रास होता है। वायु प्रदूषण का प्राकृतिक नियंत्रण पेड़-पौधों के हाथों में है। इस कारण पौधारोपण और वृक्ष-संरक्षण पर ज्यादा ध्यान देना होगा। सामुदायिक भोज में भोज्य सामग्रियों की अत्यधिक बर्बादी हुआ करती है, जो अवशिष्ट-प्रदूषण एक अहम कारण है, पर विशेष ध्यान देना नितान्त आवश्यक है। जनसंख्या वृद्धि के साथ यातायात साधनों की वृद्धि भी जुड़ी हुई है। यहाँ कम्युनिटी बस सेवा का प्रचलन में अनिवार्यता लानी होगी। इससे वायु और ऊष्मा-प्रदूषण में कमी आयेगी। फलतः वैश्विक तापन कम होगा। जीवाश्म ईंधन केवल पर्यावरण को नुकसान पहुँचा कर वैश्विक तापन को ही नहीं बढ़ा रहा है, बल्कि आर्थिक स्तर पर भी बड़ा नुकसान हो रहा है।

घरेलू अवशिष्ट में व्यवहृत जल का भी योगदान है। एक व्यक्ति औसतन दिनभर में बीस से पच्चीस ली. जल बर्वाद करता है। यह प्रदूषित जल स्वच्छ जल स्रोतों को प्रभावित कर जल-प्रदूषण को बढ़ावा देता है। जल उपयोगिता में भी मितव्ययिता लानी होगी। और प्रदूषित जल का ट्रीटमेंट कर अन्य सफाई और सिंचन कार्यों उपयोग करना होगा, ताकि जल-संकट से बच सकें वर्ष 2015 में दुनियाभर के देशों में सहमति बनी थी कि औसत वैश्विक तापमान में वृद्धि को औद्योगिक काल से पहले की तुलना में 2.0 डिग्री सेल्सियस से नीचे रोकना होगा। इसमें भी इस दिशा में प्रयास की बात थी कि इस वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस से नीचे रोकना और भी श्रेयस्कर होगा। सम्प्रति दुनिया 1.2 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा गर्म हो चुकी है। अब अगर इसे थामना है और पृथ्वी को आगत पीढ़ियों के लिये रहने लायक बनाना है, तो गम्भीर कदमों की जरूरत होगी।

क्रमशः

.....गतांक से आगे

धर्म

रमेश चन्द्र
वरिष्ठ साहित्यकार
गुरुग्राम

धम्म अर्थात् धर्म भारतीय संस्कृति की प्रमुख संकल्पना है। सामान्य अर्थों में धर्म से तात्पर्य religion माना जाता है, परंतु धर्म का एक व्यापक अर्थ भी है और जीवन में इसका प्रयोग भी व्यापक रूप में होता है। प्रस्तुत आलेख धर्म को मानव मन में नैतिकता के सूत्र की अविच्छिन्नता मानकर लिखा गया है। जीवन में भी इसका सामान्यतः इसी रूप में व्यवहार होता है।.....

धर्म और आत्मा की प्रकृति लगभग एक जैसी होती है। इन्हें अलग करना बहुत मुश्किल है। धर्म के मूल में ही आत्मा की धारणा होती है। दोनों ही हमारी चेतना के तत्व हैं। धर्म में मानवीय मस्तिष्क पर संवेदनाओं का साम्राज्य होता है। सूर्य, वायु आदि प्राकृतिक वस्तुओं में कोई शक्ति निहित होती है, परंतु धर्म में गलत कार्य हो जाने पर प्रकृति के श्राप का डर ही शक्ति का काम करता है, जबकि आत्मा मनुष्य को मोक्ष–प्राप्ति से दूरी का डर दिखाती है। धर्म में अच्छे और बुरे कार्यों से क्रमशः पुण्य और पाप की अवधारणा होती है। धर्म व्यक्ति को सदाचरण की ओर प्रवृत्त करता है, नैतिकता की भावना भरता है और उसमे आत्म–नियंत्रण पैदा करता है तथा कर्तव्य–पालन की प्रेरणा देता है। बौद्ध श्रमण ''धम्मम् शरणम् गच्छामि'' उक्ति को बहुत महत्व देते थे। इससे केवल यह ही तात्पर्य नहीं होता था कि बौद्ध धर्म को अपनाया जाए, बल्कि नैतिक जीवन जीने का जो अच्छा मार्ग है उसकी शरण में जाया जाए। यदि मनुष्य के मन में दया और धर्म जैसी कोई चीज नहीं है तो उसे अपना मुख देखने का भी अधिकार नहीं है। ईश्वर ने मनुष्य के रूप में कागज की एक नाव बनाकर बस उसे संसार रूपी गहरे जल में उतार दिया है। जिन्होंने धर्म–कर्म का काम किया, वे इस भव–सागर से पार हो गए और पापी लोग उसमें डूबकर रह गए।

पूरा महाभारत ही धर्म और अधर्म की कथा है। तभी महाभारत के स्थल कुरूक्षेत्र को धर्मक्षेत्र कहा गया। जो धर्म के साथ रहे, वही जीवित रहे, शेष का नाश हो गया। रावण, कंस, हिरण्यकश्यपु, जरासंध, शिशुपाल आदि चाहे कितने विद्वान या ताकतवर रहे हों, परंतु अधर्मी होने के कारण उनका नाश हुआ। व्यक्ति यदि कितने ही मूल्यवान आभूषणों, परिधानों, इत्रों से लदा हो, परंतु उसके मन में धर्म न हो तो वह मैला ही है। यदि व्यक्ति के मन में धर्म भावना नहीं है, तो वह किसी पर कितना भी पैसा लुटा दे, उसे शुभ आशीर्वाद नहीं मिलता। यदि गहरे रूप में देखें तो ''भारतीयता'' शब्द धर्म की खान है। भारत में धर्म की मान्यता और इसका पालन जीवन की आधारशिला मानी जाती है और इस शब्द में धर्म–सम्मत सभी गुणों का समावेश हो जाता है। यदि पुत्र भी अधर्मी हो तो उसको भी त्याग देना धर्म का पालन करना होता है। परंतु आज अधर्म का साम्राज्य इतना विशाल हो गया है कि अधर्म ने एक सामाजिक मान्यता ग्रहण कर ली है और अधर्मी अधर्मी नहीं कहलाता। अंग्रेजी में एक कहावत है कि सामाजिक गलती विधि बन जाती है। इस प्रकार अधर्म समाज की एक सामान्य गलती बन चुका है और अधर्म का शासन स्थापित हो रहा है। अधर्मी लोग धर्म–कर्म वालों पर हँसते हैं

और व्यंग्य करते हैं तथा अधर्म और छल-कपट से कमाए धन का आडंबर लगाते हैं। अधर्म की कमाई उनके लिए गर्व की बात होती है, जिसका वे बखान करते भी नहीं अघाते। काजल से भरे ऐसे संसार में धर्म का हाथ बहुत संभलकर पकड़ना होता है। भारत में यदि धर्म का साक्षात् रूप देखना हो तो कन्या को देखा जा सकता है। कन्या के लिए किया गया कोई भी कार्य पुण्य का कार्य माना जाता है। कन्या सभी कलुशों से दूर पवित्र होती है और धर्म का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए आज भी माँ दुर्गा के अष्ट रूप धर्म की स्थापना को प्रतिबिंबित करते हैं। श्रीराम चन्द्र, श्रीकृष्ण, ईशा मसीह, सुकरात, अरस्तु, प्लेटो, गुरु नानक, पैगंबर, महात्मा गांधी आदि धर्माधिकारियों ने धर्म के ये ही संदेश दिए हैं। यदि जीवन शांतिपूर्वक व्यतीत करना हो तो धर्म का अंगीकरण ही उसका सबसे आसान उपाय है।

जागो हे रघुबीर

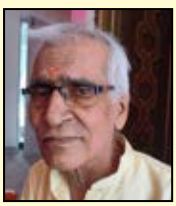

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
स्वतंत्र लेखन
बिहार

अब जागो हे रघुबीर,
सुहावनि भोर भयो ।
भानू उदित उलूक लूकाने,
हर्षित मोर चकोर भयो ।
अब जागो हे रघुबीर.....
शशि भए मन्द छीन भए तारे,
दीपक जोति मलीन भयो ।
अब जागो हे रघुबीर.....
बिकसे कमल कुमुद सकुचाए,
पक्षिन्ह कलरव शोर भयो ।
अब जागो हे रघुबीर.....
मन्दिर मँह घंटा धुनि गूँजत,
चहुँ दिशि बेदोच्चार भयो ।
अब जागो हे रघुबीर.....

> **मुकाबला ऐसे करो कि अगर हार भी जाओ तो, जीत से ज्यादा तुम्हारे हार के चर्चे हो ।**

पौराणिक शास्त्र : मानव अधिकार का उद्गम स्थल

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

नीड न दो, चाहे टहनी पर।
चाहे आश्रय छिन्न –भिन्न कर डालो।।
पर ईश्वर ने जब पंख दिए है।
तो उन्मुक्त उड़ान में बाधा मत डालो।।

स्वाधीनता या आजादी का वास्तविक अर्थ व महत्व पिंजरे में बंद पक्षी या वास्तव में यातना भोगता ,पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा व्यक्ति ही बता सकता है । आज हम आजादी की खुली हवा में श्वास ले पा रहे है। तो केवल ओर केवल उन स्वतंत्रता सेनानियों, देश भक्तों, रणबाँकुरों के कारण जिन्होंने वेदों के मूलमंत्र –

पृथ्वी माता पुत्रौहम पृथिव्याः।

का दिल से अनुकरण करते हुए अपनी मातृभूमि को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। आज हमे स्वतंत्र देश के नागरिक होने का गौरव प्राप्त है। पर हमें कभी यह नही भूलना चाहिए कि आजादी हमे कितनी कुर्बानियों के बाद प्राप्त हुई है आज हम सभी संविधान प्रदत्त आधिकारो से सम्पन्न नागरिक है। प्रत्येक व्यक्ति को संविधान के द्वारा गरिमा पूर्ण तरीके से जीवनयापन करने के लिए अधिकार दिए गए है। जिनके बिना मानव अस्तित्व की कल्पना करना भी दुष्कर है।। संक्षेप में कहे तो मानव अधिकार वे अधिकार है जो किसी भी व्यक्ति के गरिमामय जीवन जीने, उसकी स्वतंत्रता व समानता की प्रतिष्ठा की रक्षा को सुनिश्चित करते है अब विचारणीय यह है कि वर्तमान में जो मानवाधिकार मनुष्य को दिए गए है उन की मूल जड़ें कहाँ है

स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में आज के लेख में मैने यही बताने का लघु प्रयास किया है आज सभी अपने अधिकारों के प्रति सजग है। पौराणिक ग्रंथो के संदर्भो में मैने यही खोजने का प्रयास किया कि आखिर इन मानवाधिकारों का उद्गम स्त्रोत कहाँ है। प्राचीन काल मे अधिकारों का क्या स्वरूप था। वैदिककाल, या वैदिक काल के परवर्ती साहित्य मे राज्य का संचालन व राजा के अधिकारो का रूप क्या था। वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ होने के साथ साथ अपौरुषेय, लोकहिताय, सार्वभौमिक है। मानव जीवन के सभी समस्त पहलुओं का इतना विशद व उत्तम वर्णन अन्यत्र मिलना दुष्कर है। वेदों में समाज के सभी वर्गों के हितों की रक्षा के लिए राजतंत्र व्यवस्था का विधान बताया गया है। राजा शब्द रंज धातु से निष्पन्न जिसका अर्थ है प्रसन्न करना। वेद, रामायण, महाभारत, अर्थशास्त्र, पुराण, स्मृतियों में राजा का मुख्य कर्तव्य प्रजा को प्रसन्न करना ही माना गया है। रघुवंश महाकाव्य में कालिदास ने राजपद की सार्थकता प्रजानुरंजन में ही स्वीकार की है।

यथा प्रहलादनाचन्द्रः प्रतापतपनो यथा।
तथैव सोमूदनवर्थो राजा प्रकृतिरंजनात।

(रघुवंश/4/12)

अथर्ववेद में भी राजा का प्रमुख कर्तव्य प्रजानुरंजन ही मानते हुए कहा गया है–हे राजन! तू प्रजा का मित्र बनकर राज्य कर। प्रजा की इच्छा का आदर कर। अर्थशास्त्र में भी राजा का प्रधान कर्तव्य अपना हित संपादन न करके प्रजा को प्रसन्न करना है।

प्रजानां सुखे सुखं राज्ञः प्रजानाम हिते हितं। *1/1/18*

अग्नि पुराण में राजा की तुलना एक गर्भिणी स्त्री से की गई है। जैसे एक गर्भिणी स्त्री स्वयं अनेक कष्ट सहकर भी अपने गर्भस्थ शिशु की रक्षा करती है। ठीक उसी प्रकार राजा का भी कर्तव्य है कि वह स्वयं कष्ट सहकर भी अपनी प्रजा के हितों की रक्षा करे।

नित्यं राज्ञा तथा गर्भिणी सहधर्मिणी।
यथा स्वसुखमुसृजय गर्भस्थ सुखमावहेत।।

इसी प्रकार महाभारत के शांतिपर्व में भी राजा की सार्थकता प्रजानुरंजन में ही बतायी गयी है।

लोके रंजनमेवात्र राज्ञाम धर्म सनातनः
महाभारत शांतिपर्व *(5/1/11)*

प्रस्तुत सभी दृष्टांत इस बात की पुष्टि करने में सक्षम है कि वैदिक काल व उसके परवर्ती समय में राजा के कर्तव्यों का इस तरह का विधान बताया है आदर्श राजा अपनी प्रजा की रक्षा करते उनकी प्रसन्नता के लिए वह सब कुछ करते थे जो कि अपनी संतान के लिए करते थे। आप सोचिए! जब एक आम आदमी भी अपनी संतान की खुशहाली तरक्की, प्रसन्नता के लिए अपना सर्वस्व दांव पर लगा देता है। फिर राजा की तो बात ही क्या? राजा के कर्तव्यों का निरूपण इस प्रकार से किया गया कि प्रजा के अधिकार उसी मे समाविष्ट थे। सभी धर्म ग्रंथो में प्रजा का संतान के समान पालन करना राजा का कर्तव्य बताया गया है।

साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है। हर साहित्यकार अपने समय मे प्रचलित मान्यताओं को अपनी लेखनी के माध्यम से उकेरने का प्रयास करता है आप जितने भी ग्रंथो का अनुशीलन करेंगे तो आप पाएंगे कि प्राचीन काल मे प्रजा व तपस्वी, तपोवनों की आंतरिक व बाह्य सुरक्षा करना भी राजा का कर्तव्य था। इससे इस बात की पुष्टि हो जाती है कि राजा के कर्तव्यों में ही प्रजा के अधिकार निहित थे। उनके योग–क्षेम के लिए राजा उत्तरदायी था अप्रत्यक्ष रूप से प्रजा अधिकार सम्पन्न थी।

वैदिक काल मे महिलाओं को पढ़ने का अधिकार प्राप्त था। गार्गी मैत्रेयी, इंद्राणी आदि के शास्त्रार्थ के प्रसंग वेदों में वर्णित है। इसके अतिरिक्त राजकुमारियों की योग्यता के अनुसार वर चयन का अधिकार था रामायण में राजा जनक ने अपनी दुलारी सीता के लिए सुयोग्य वर के लिए सशर्त स्वयंवर रखा था जो विश्व विदित ही है। कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में इंदुमती के स्वयंवर का बहुत ही शानदार चित्रण किया है। महाविदुषी विद्योत्तमा का कालिदास के साथ शास्त्रार्थ की कहानी तो बचपन मे आप सबने अवश्य पढ़ी होगी। जो यह सिद्ध करती है कि स्त्रियां, कन्याए भी स्वेच्छा से पतिवरण का अधिकार रखती थी। ये तत्कालीन समाज मे उनके अधिकारों को ही इंगित करते है। इसके अतिरिक्त राजकुमारियों को गायन, वादन नृत्य की शिक्षा दी जाती थी कहीं कहीं तो उन्हें सैन्य प्रशिक्षण भी दिया जाता था।

अगर हम पारिवारिक संयोजना पर दृष्टिपात करे तो पाएंगे कि हमारी भारतीय संस्कृति में –

मातृ देवो भव
पितृ देवो भव
आचार्य देवो भव

बताकर माता, पिता व गुरु को असीमित अधिकारो से सम्पन्न बनाया गया, तत्कालीन समाज मे इन तीनो की बहुत ही सुदृढ़ स्थिति थी। देवता के समान उनकी आज्ञापालन अर्चन, वंदन सेवा सुश्रुषा, सत्कार भोग आदि प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य बताया गया। जिसके कारण समाज में प्रत्येक घर मे माता पिता का बहुत मान, सम्मान था जो उनके आधिकारो के ही द्योतक कहे जा सकते हैं।

भारतीय संस्कृति में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त किये जाने वाले 16 संस्कारो का सम्यक रूप से यदि हम अवलोकन करें तो हमे इनमें भी सर्वत्र अधिकार ही दिखाई देते है। उदाहराणार्थ – विवाह संस्कार में जब वर–वधू अग्नि को साक्षी मानकर सात फेरे लेते है सप्तपदी के उन सात श्लोकों में भी वर द्वारा वधु को सामाजिक, आर्थिक, भावनात्मक सुरक्षा देने का वचन देता है सबके सामने उसे अपनी अर्धांगिनी स्वीकार करके सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान करता है। विवाह संस्कार में पत्नी के अधिकारों की ही उद्घोषणा है।

इसी प्रकार से विद्यारम्भ और अन्नप्राशन संस्कार में भी अमूर्त रूप से बालक को अपने भरण पोषण, शिक्षा का अधिकार स्वतः ही प्राप्त हो जाता है क्योंकि बालक का भरण पोषण करते हुए उसको शिक्षित करने का दायित्व माता पिता का बताया गया है। इसी प्रकार अंत्येष्टि संस्कार में संतान का दायित्व ही माता पिता का अधिकार था। यह स्पष्टतः परिलक्षित होता है।

इसी कारण यह संतान का दायित्व निर्धारित किया गया कि आजीवन संतान का पालन पोषण करने वाले माता – पिता संसार के आवग्समान के चक्र से छूट कर गरिमापूर्ण तरीके से संसार से विदाई ले। ये माता –पिता का अधिकार ही तो है। प्रत्येक धर्मग्रंथ में अपने बुजुर्गो के प्रति आदर, सम्मान सेवा सुश्रुषा करने का निर्देश दिया गया है। जो कि तत्कालीन समाज मे माता पिता के अधिकारों की पुष्टि करने में सक्षम है।

प्राचीन समाज में माता पिता का निर्णय अंतिम निर्णय होता था। इसी कारण उस समय कोई संतान अपने वृद्ध माता पिता को वृद्धाश्रम नही भेजती थी। बल्कि जीवन पर्यन्त उनका मान सम्मान होता था। ये सम्मान सेवा आदि समाज मे उनकी सुदृढ़ स्थिति व उनके अधिकारों की पुष्टि करने में सक्षम है। सारांश यही है कि – हमारे पौराणिक ग्रंथो में दिए अधिकार ही मानव अधिकारों में प्रतिबिम्बित होते है।

हरेली की पहचान गेड़ी

श्रीमती ज्योति सक्सेना
नवाचारी व्याख्याता
शासकीय हाई स्कूल मुलमुला
(पामगढ़)

छत्तीसगढ़ का पारंपरिक लोक उत्सव पहला त्यौहार हरेली पर्व हरेली त्यौहार किसानों का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है हरेली शब्द हिंदी शब्द हरियाली से उत्पन्न हुआ है जो हर वर्ष सावन महीने के अमावस्या तिथि में मनाया जाता है हरेली पर्व मुख्यता खेती–किसानी से जुड़ा पर्व है। छत्तीसगढ़ राज्य में यह पर्व ग्रामीण अंचल में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। हरेली पर्व के माध्यम से किसान भगवान से अच्छी फसल की कामना करते हैं ।खेती किसानी में काम आने वाले उपकरण नांगर, हल, जुड़ा ,चतवार, हंसिया,टँगिया, बसूला, बींधना, रापा, कुदारी, आरी भंवारी के प्रति कृतज्ञता समर्पित करते हैं। घर में किसानिन गेहूं आटे या चावल आटे में गुड़ मिलाकर मीठा चीला रोटी एवं छत्तीसगढ़ी व्यंजन कृषि यंत्रों को समर्पित करती हैं।

बरसात के मौसम में गांव में हर जगह कीचड़ ही कीचड़ होता है लेकिन गेड़ी पर सवार होकर कोई भी आसानी से कहीं भी आ जा सकता है ।गेड़ी बनाकर उस पर चढ़कर सुरक्षित रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाया जा सकता है गेड़ियां बांस से बनाई जाती है दो बांसों को समान दूरी पर कीलों से ठोका जाता है एक अन्य बांस के टुकड़े को बीच से फाड़ कर दो भागों में बांट दिया जाता है इसे फिर से रस्सी से जोड़ कर दो पंजे बना दिए जाते हैं यह पौवा असल में एक पायदान हैं जो दो बांसों में लगी कीलों पर टिका रहता है यह भी माना जाता है कि हरेली के दिन से तंत्र विद्या की शिक्षा देने की शुरुआत की जाती है इसी दिन से प्रदेश में लोकहित की दृष्टि से जिज्ञासु शिष्यों को पीलिया, विष उतारना, नजर से बचाने महामारी, बाहरी हवा से बचाने समेत कई तरह की समस्याओं के बचाने के लिए मंत्र सिखाया जाता है। हरेली के दिन पुरुष एवं बच्चे गेड़ी बनाकर उस पर चढ़ते हैं गेड़ी दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाता है। छत्तीसगढ़ में हरेली त्यौहार को गेड़ी त्यौहार के नाम से भी जाना जाता है। गेड़ी चढ़ना अच्छे स्वास्थ्य का प्रतीक माना जाता है लेकिन धीरे–धीरे यह परंपरा अब कम दिखाई देती है।

स्थानीय एवं पारंपरिक खेलों को बढ़ावा देने के उद्देश्य छत्तीसगढ़ सरकार की महत्वकांक्षी योजना छत्तीसगढ़िया ओलंपिक खेल की शुरुआत की गई जिसमें गेड़ी को भी शामिल किया गया है विलुप्त होती गेड़ी परंपरा पुनः जीवंत रूप में दिखाई दे रही है। गेड़ी– गांव में तो लोग अपने हाथों से बना लेते हैं लेकिन अब गेड़ी प्रतियोगिता आयोजित होने से इस वर्ष गेड़ी की बिक्री सी – मार्ट में बहुत ही कम दामों में उपलब्ध है, ताकि शहर के बच्चों को भी उपलब्ध हो सके

छत्तीसगढ़ी जीवन शैली और प्रकृति से जुड़ा हुआ यह त्यौहार हरेली है जिसे हरेली त्यौहार के नाम से जाना जाता है छत्तीसगढ़ वासी हल बैल एवं विभिन्न कृषि उपकरण औजार की पूजा करके पूरे विश्व में हरियाली छाई रहने की कामना करते हैं।

हरेली त्यौहार के माध्यम से किसान भगवान से अच्छी फसल की कामना करते हैं।

छत्तीसगढ़िया ओलंपिक खेल में गेड़ी को विशेष महत्व देने के कारण गेड़ी परंपरा एक बार पुनः गांव एवं शहर दोनों में दिखाई देने लगी है। छत्तीसगढ़ में इसे हरेली तिहार के नाम से जाना जाता है। कहा भी जाता है जहाँ है हरियाली, वहाँ है खुशहाली इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वृक्षारोपण वर्ह्द रूप में सभी सामाजिक संस्थाओं एवं व्यक्तिगत रूप से भी किया जा रहा है। प्रदूषित इस वातावरण को फिर से पवित्र बनाएं, आओ मिलकर पेड़ लगाएं, पेड़ लगाएं। पेड़ लगाने के लिए जागरूक किया जा रहा है, हरेली तिहार पर कम से कम पांच पेड़ अवश्य लगाएं।

संजू पाठक
स्वतंत्र लेखन
इंदौर, मध्य प्रदेश

सुहाना बारिश का मौसम

सुंदर है! बारिश का मौसम,
यह बड़ा सुहाना लगता है।
पड़तीं हैं फुहारें रिमझिम सी,
मन का कोना खिल उठता है।।

तपती धरती का अग्र पटल,
चहुंओर हरित हो जाता है।
पशु, पक्षी और आबाल, वृद्ध का,
मन प्रसन्न हो जाता है।।

काले बादल जब उमड़ घुमड़,
छा जाते आसमान में हैं,
विद्युत गर्जन का उद्घोषण
सूचक है, जल प्रयाण में है।।

मूसलाधार होती बारिश,
बढ़ जाता भू का जल स्तर।
बर्बाद न हो जल बारिश का
वाटर हार्वेस्टिंग हो हर घर।।

दायित्व निर्वहन करें सभी,
जल संचय हो सबका चिंतन।
नालों में जल न जा पाए,
करवाएं भू–जल संवर्धन।

कर सके सुनिश्चित हम सब यह,
गर जल है तो यह जीवन है।
बिन जल सूना है जग सारा,
ना कोई फिर आकर्षण है।।

आग्रह मेरा इस मौसम में,
करिए आरोपित एक वृक्ष।
संतुलित बनेगा पर्यावरण,
होगा निज वातावरण स्वच्छ।।

घर के प्रेत या पितर रुष्ट होने के लक्षण और उपाय ?

बहुत जिज्ञासा होती है आखिर ये पितृदोष है क्या...?
पितृ –दोष शांति के सरल उपाय पितृ या पितृ गण कौन हैं...?
आपकी जिज्ञासा को शांत करती विस्तृत प्रस्तुति...!

पंडित कैलाशनारायण
ज्योतिषाचार्य
उज्जैन, मध्य प्रदेश

पितृ गण हमारे पूर्वज हैं जिनका ऋण हमारे ऊपर है, क्योंकि उन्होंने कोई ना कोई उपकार हमारे जीवन के लिए किया है, मनुष्य लोक से ऊपर पितृ लोक है, पितृ लोक के ऊपर सूर्य लोक है एवं इस से भी ऊपर स्वर्ग लोक है...!

आत्मा जब अपने शरीर को त्याग कर सबसे पहले ऊपर उठती है तो वह पितृ लोक में जाती है, वहाँ हमारे पूर्वज मिलते हैं अगर उस आत्मा के अच्छे पुण्य हैं तो ये हमारे पूर्वज भी उसको प्रणाम कर अपने को धन्य मानते हैं की इस अमुक आत्मा ने हमारे कुल में जन्म लेकर हमें धन्य किया, इसके आगे आत्मा अपने पुण्य के आधार पर सूर्य लोक की तरफ बढती है...!

वहाँ से आगे यदि और अधिक पुण्य हैं, तो आत्मा सूर्य लोक को भेद कर स्वर्ग लोक की तरफ चली जाती है, लेकिन करोड़ों में कोई एक आत्मा ही ऐसी होती है, जो परमात्मा में समाहित होती है जिसे दोबारा जन्म नहीं लेना पड़ता है, मनुष्य लोक एवं पितृ लोक में बहुत सारी आत्माएं पुनः अपनी इच्छा वश मोह वश, अपने कुल में जन्म लेती हैं...!

पितृ दोष क्या होता है...??

हमारे ये ही पूर्वज सूक्ष्म व्यापक शरीर से अपने परिवार को जब देखते हैं और महसूस करते हैं, कि हमारे परिवार के लोग ना तो हमारे प्रति श्रद्धा रखते हैं और न ही इन्हें कोई प्यार या स्नेह है और ना ही किसी भी अवसर पर ये हमको याद करते हैं, ना ही अपने ऋण चुकाने का प्रयास ही करते हैं तो ये आत्माएं दुखी होकर अपने वंशजों को श्राप दे देती हैं, जिसे 'पितृ–

दोष' कहा जाता है...!

पितृ दोष एक अदृश्य बाधा है। ये बाधा पितरों द्वारा रुष्ट होने के कारण होती है पितरों के रुष्ट होने के बहुत से कारण हो सकते हैं, आपके आचरण से, किसी परिजन द्वारा की गयी गलती से, श्राद्ध आदि कर्म ना करने से, अंत्येष्टि कर्म आदि में हुई किसी त्रुटि के कारण भी हो सकता है।

इसके अलावा मानसिक अवसाद, व्यापार में नुक्सान, परिश्रम के अनुसार फल न मिलना, विवाह या वैवाहिक जीवन में समस्याएं, कैरिअर में समस्याएं या संक्षिप्त में कहें तो जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्ति और उसके परिवार को बाधाओं का सामना करना पड़ता है पितृ दोष होने पर अनुकूल ग्रहों की स्थिति, गोचर, दशाएं होने पर भी शुभ फल नहीं मिल पाते, कितना भी पूजा पाठ, देवी, देवताओं की अर्चना की जाए, उसका शुभ फल नहीं मिल पाता।

पितृ दोष दो प्रकार से प्रभावित करता है!!!!!!

1. अधोगति वाले पितरों के कारण

2. उर्ध्वगति वाले पितरों के कारण

अधोगति वाले पितरों के दोषों का मुख्य कारण परिजनों द्वारा किया गया गलत आचरण, की अतृप्त इच्छाएं, जायदाद के प्रति मोह और उसका गलत लोगों द्वारा उपभोग होने पर, विवाहा आदि में परिजनों द्वारा गलत निर्णय। परिवार के किसी प्रियजन को अकारण कष्ट देने पर पितर क्रुद्ध हो जाते हैं ,परिवार जनों को श्राप दे देते हैं और अपनी शक्ति से नकारात्मक फल प्रदान करते हैं।

उर्ध्व गति वाले पितर सामान्यतः पितृदोष उत्पन्न नहीं करते, परन्तु उनका किसी भी रूप में अपमान होने पर अथवा परिवार के पारंपरिक रीति–रिवाजों का निर्वहन नहीं करने पर वह पितृदोष उत्पन्न करते हैं।

इनके द्वारा उत्पन्न पितृदोष से व्यक्ति की भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति बिलकुल बाधित हो जाती है ,फिर चाहे कितने भी प्रयास क्यों ना किये जाएँ ,कितने भी पूजा पाठ क्यों ना किये जाएँ,उनका कोई भी कार्य ये पितृदोष सफल नहीं होने देता। पितृ दोष निवारण के लिए सबसे पहले ये जानना जरूरी होता है कि किस गृह के कारण और किस प्रकार का पितृ दोष उत्पन्न हो रहा है ?

जन्म पत्रिका और पितृ दोष जन्म पत्रिका में लग्न, पंचम, अष्टम और द्वादश भाव से पितृदोष का विचार किया जाता है। पितृ दोष में ग्रहों में मुख्य रूप से सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शनि और राहू – केतु की स्थितियों से पितृ दोष का विचार किया जाता है।

इनमें से भी गुरु, शनि और राहु की भूमिका प्रत्येक पितृ दोष में महत्वपूर्ण होती है इनमें सूर्य से पिता या पितामह, चन्द्रमा से माता या मातामह, मंगल से भ्राता या भगिनी और शुक्र से पत्नी का विचार किया जाता है।

अधिकाँश लोगों की जन्म पत्रिका में मुख्य रूप से क्योंकि गुरु, शनि और राहु से पीड़ित होने पर ही पितृ दोष उत्पन्न होता है, इसलिए विभिन्न उपायों को करने के साथ साथ व्यक्ति यदि पंचमुखी, सातमुखी और आठ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर ले, तो पितृ दोष का निवारण शीघ्र हो जाता है।

पितृ दोष निवारण के लिए इन रुद्राक्षों को धारण करने के अतिरिक्त इन ग्रहों के अन्य उपाय जैसे मंत्र जप और स्तोत्रों का पाठ करना भी श्रेष्ठ होता है। ■

भरत (सॉनेट)

प्रो. विनीत मोहन औदिच्य
विभागाध्यक्ष अंग्रेजी
वरिष्ठ कवि एवं गजलकार
सागर, मध्य प्रदेश

कैकयी नंदन भरत रहे हैं रघुनंदन के प्रिय लघु भ्राता
आदर्शों की खान कहाते और धर्म के अनुपम ज्ञाता
है आचरण पुनीत, अनुकरण योग्य, सहज सुखदायक
सन्यासी सी चित्तवृत्ति धरते कर में रखते धनु सायक।

जब साम्राज्ञी माता ने उनको राजतिलक के लिए मनाया
कपट पूर्ण व्यवहार भरत के मन को तनिक न भाया
दशरथ पिता मरण का कारण स्वयं को उसने माना
व्यथित कर गया राम सिया का लक्ष्मण संग वन जाना।

राज्य अयोध्या श्री राम को देने जब चित्रकूट प्रस्थान किया
गुरु वशिष्ठ, माताओं, नगर वासियों ने अति सम्मान दिया
प्रभु की आज्ञा कर शिरोधार्य वह चरण पादुका ले आये
जा नंदीग्राम में वास किया और भक्त शिरोमणि कहलाये।

त्यागा सभी राज्य का वैभव, अपनाया साधक का जीवन।
अपने प्रभु श्रीराम चरण में, किया समर्पित तन, मन, धन।।

कमजोर व्यक्ति हमेशा भीड़ में होता है लेकिन एक बुद्धिमान आदमी हमेशा अकेला होता है।

मानवतावादी विश्व कवि तुलसीदास

मोरे जाति–पांति न चहौं काहू की जाति–पांति *(कवितावली 7–107–1)*
तुलसी भगत सुपच भलो, भजै रैनि दिन राम।
ऊंचे कुल केहि काम को, जहां न हरि को नाम।।
अति ऊंचे भूघरनि पर, भुजगन के स्थान।
तुलसी अति नीचे सुखद ऊरव अन्न अरु पान (वैराग्य संदीपनी, 40–41)

डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
स्वतंत्र लेखन
योग. प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ
(आयुर्वेद रत्न)
कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय महाकवि तुलसी का जन्म बहुत से लोग श्रावण शुक्ल सप्तमीं 1554 वि. (1497 ई.) को मानते हैं, तो ज्यादातर विद्वान श्रावण शुक्ल सप्तमी 1589 वि. (1532 ई.) को। उनकी मृत्यु शनिवार, श्रावण कृष्ण तृतीया, 1680 वि. (1623 ई.) को अक्सर निर्विवाद है। राजनैतिक दृष्टि से, तुलसीदास के जीवन काल में हुमायूं, शेरशाह सूरी और सूरी वंश के शासकों पुनः हुमायूं, अकबर (1556–1605) और जहांगीर (1605–27 ई..) की प्रभुता रही। लेकिन वक्त और असर की दृष्टि से अकबर उनके समकालीन अधिक रहे। विख्यात इतिहासकार विसेंट ए. स्मिथ के अनुसार, मुगलकालीन भारत के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति तुलसीदास थे, अकबर नहीं, क्योंकि अकबर का साम्राज्य अतीत से विलीन हो चुका है जबकि तुलसीदास का सतत–वर्द्धमान है। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के शब्दों में यह कहना असत्य होगा कि 'तुलसीदास अकबर के समय हुए' बल्कि यह कहना सच होगा कि 'अकबर तुलसीदास के समय हुए'। सर जॉर्ज ग्रीयर्सन ने तुलसीदास को भारत के सर्वश्रेष्ठ कवियों और सर्वश्रेष्ठ सुधारकों में से एक माना है और पंथ प्रवर्तन युग में पंथ प्रवर्तन न करने की उनकी विनम्रता की सराहना की है। गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में तुलसीकृत रामचरित मानस को भक्ति मार्ग का सर्वोत्तम शास्त्र माना है। वारान्निकोव ने तुलसी को विश्वकवि और जनकवि कहा है। डॉ. राम मनोहर लोहिया तुलसी के 'सात्विक रस' के प्रशंसक तो थे ही, प्रख्यात चित्रकूट रामायण मेला के प्रवर्तक भी थे।

तुलसीदास का विश्वकवित्व और राष्ट्रव्यापी महत्त्व हिंदी का सर्वोपरि गौरव बिंदु है। उन पर 800 से ज्यादा शोध कार्य और इससे भी ज्यादा आलोचना ग्रंथ, अनेक काव्य और शत–

शत कविताएं तो उनकी अद्वितीयता प्रमाणित करती हैं, अकेले रामचरित मानस के करीब 600 से अधिक विभिन्न रूप प्रकाशन, शताधिक टीकाएं, इस अमर महाकाव्य के अलावा उनके अन्य महान शास्त्रों विनय पत्रिका, कवितावली और गीतावली के संसार की खास भाषाओं में अनुवाद इत्यादि उन्हें हिंदी का गौरव सुमेरु बनाए हुए हैं उनके प्रशंसकों में समकालीन अब्दुर्रहीम खान– खाना से लेकर वर्तमान कवि 'दीन' मोहम्मद दीन तक, अनुसूचित जातिगत महापुरुषों में समकालीन नामदास से आधुनिक जगजीवनराम तक मौजूद हैं ही, शत–शत ईसाई और साम्यवादी मनीषी (कामिल बुल्के हों या डॉक्टर रामविलास शर्मा) भी सम्मिलित थे। समर्थ रामदास जब नितांत तरुण महात्मा थे, तब तुलसीदास से मिलकर प्रभावित हुए थे। मोरोपंत सरीखे श्रेष्ठ मराठी कवि और संत–महाकवि तथा संगीत–सम्राट त्यागराज ने उनकी काव्य रचना की है। संत निहाल सिंह उनके नाम महात्म्य को इस अनूठी अर्द्धाली को उद्धृत करते न थकते थे–

'कहंहु कहां लगि नाम बड़ाई, राम न सकहि राम गुन गाई।'

स्वतंत्रता और शौर्य का संदेश

तुलसीदास के सीमातीत आदर और अतुलनीय लोकनायकत्व का कारण क्या है? उनका पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं का मंत्र और उससे संयुक्त शक्ति– सिद्धांत। आज राम– सीता– लक्ष्मण की मूर्तियों से संपन्न मंदिरों की गणना संभव नहीं है। आज हनुमान के अनगिनत मंदिर 'राम से अधिक राम का दासा' की स्थापना को प्रमाणित कर रहे हैं। आज रामलीला राष्ट्र (इंडोनेशिया इत्यादि में भी) की मुख्य जन–संस्था बन गई है। हजारों लोग मानस कथा से आजीविका अर्जित करते हैं, करोड़ों प्रेरणा पाते हैं। रामकिंकर उपाध्याय जैसे विद्वान तथा मुरारी बापू और संत श्री डॉक्टर सुमन जी मानस भूषण जैसे मानस विवेचक और कथावाचक राष्ट्र और संसार भर में आदर प्राप्त कर रहे हैं। आज अयोध्या (तुलसी उद्यान), चित्रकूट (तुलसी घाट), वाराणसी (तुलसी घाट संकटमोचन मानस मंदिर), राजापुर (बांदा), सोरो (एटा) इत्यादि तुलसी तीर्थ भी है। शक्ति– मंत्रदाता तुलसी की वजह से ही यह सब हो सका है, पुरातत्व और इतिहास इसका गवाह है। तुलसी का प्रभाव सतही न होकर गहरा है, भावनात्मक न होकर जीवन व्यापी है। जनता ने 'जो राम तुलसी के दो तुलसीदास क्रे कहकर राम और तुलसी को एक धरातल पर खड़ा कर दिया है। कथा–सम्राट प्रेमचंद कहा करते थे– 'तुलसी ने राम को अमर कर दिया'। आलोचक–सम्राट रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है– 'गोस्वामी जी ने उत्तर पथ के जीवन को 'राममय' कर दिया। महाकवि निराला ने अपने खंडकाव्य 'तुलसीदास' में विश्व कवि की सांस्कृतिक चेतना और प्रभावान्विति का गहनतम अंकन और आकलन किया है।

दीन–दलित संवेदन

तुलसीदास स्पष्ट मानवतावादी थे। यह बात कवितावली, वैराग्य संदीपनी इत्यादि में तो विशद है ही, रामचरित मानस में भी इस तरह का वर्णन भरा पड़ा है। उनके दलित और दरिद्र संवेदन के प्रमाण देखें–

तेहिं तें कहहिं संत स्तुति टेरें। परम अकिंचन प्रिय हरि केरें।।

(रामचरित मानस 1/160/2)

बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं। गिरि निज सिरनि सदा तृन धरहीं।।
जलधि अगाध मौलि बह फेनू। संतत धरनि धरत सिर रेनू।।

(रामचरित मानस 1/166/7–8)

उन्होंने परम अद्वैत सिद्ध के उद्‌गार–रूप में विश्व के समस्त प्राणियों की वंदना की है–

सीय राम मय सब जग जानी। करहुं प्रनाम जोरि जुग पानी।

(रामचरित मानस 1/7–घ/2)

उमा जे राम चरन रत विगत काम मद क्रोध।
निज प्रभुमय देखहिं जगत केहिं सन करहिं बिरोध।।

(रामचरित मानस साथ 7/112 ख)।

जनकल्याण मूलक समतावाद

'तुलसी ने धरमु न दूसर सत्य समाना, परम धरमु जग विदित अहिंसा पर दुख द्रवै सुसंत पुनीता' के साथ– साथ घोषणा की है।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा नहीं अधमाई।।

उनके रामराज में विषमता खोई थी, समता का बोलबाला था तथा शासक प्रजा से कहता था–

नहिं अनीति, नहिं कछु प्रभुताई। सुनहु, करहु जो तुम्हहिं सोहाई।।

तुलसीदास ने आदर्श राज्य (यूटोपिया) का निरूपण दो स्थानों पर किया है– रामचरित मानस के बालकांड में राजा प्रताप भानु के राज्य के रूप में और इसी महाकाल के उत्तरकांड (जो उनका दर्शन कांड है) के रामराज्य के रूप में। उनके अनुसार राजा मुखिया या नेता है जिसका आदर्श मुख होना चाहिए। मुख खान–पान तो करता है लेकिन रखता एक कण नहीं, क्योंकि समस्त समाज के अंगो का पालन ही उसका उद्देश्य है।

मुखिया मुख–सो चाहिए, खान–पान को एक। पालै–पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक।

साम–दाम–दंड–भेद राजनीति के शाश्वत अंग हैं। लेकिन जब 'नहिं दरिद्र कोऊ दुखी न दीना' की दशा होती है (जैसी कि आज विकसित देशों में है) तब समाज खुद उत्थान करता रहता है, शासन मात्र विदेश–नीति, आंतरिक सुरक्षा और अधिकाधिक विकास में केंद्रित हो जाता है। उनके समय के कुशासन का चित्र देखें–

गोंड गंवार नृपाल महि, जमन महामहिपाल।
साम न दानं न भेद कलि, केवल दंड कराल।।

तुलसीदास जब गोंड या गंवार या शूद्र जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं तब उनका आशय वर्ग या जाति में बद्ध न होकर अनभ्यास या अयोग्यता से होता है क्योंकि वे खुद को अतिमतिमंद, गंवार, कुचाली इत्यादि कहते हुए नहीं थकते। वे दंड नीति को घटिया समझते हैं। तुलसीदास का महान मानवतावाद बाल्मीकि–रामायण के प्रक्षिप्त अवैदिक, अनैतिहासिक, राम–क्षति–कारी, सीता त्याग और शंबूक कथा से कलंकित किए गए उत्तरखंड की संपूर्ण उपेक्षा

से भी उजागर होता है। 'दुइ सुत सुंदर सीता जाए' से युक्त रामचरितमानस (मूल बाल्मीकि रामायण युद्ध कांड में स्पष्टतः समाप्त किया गया है... रामराज्य के वर्णन से संपन्न के ही सदृश) सीता त्याग की अनार्य–कल्पना से मुक्त है, मानवतावाद–विरोधी शंबूक– कल्पना से भी। तुलसी के राम ने जनकपुर (नेपाल) से लेकर सागर– पार (लंका) तक के कोल, किरात, भिल्ल (भील), पिशाच, गृद्ध, शबर, वानर इत्यादि गिरिजन बनवासी आदि द्रविड़ को संयुक्त कर विराट राष्ट्र का निर्माण किया था जिनकी कथा भारतीय उपमहाद्वीप में ही नहीं, चीन, जापान, कोरिया–द्वय, थाईलैंड, वियतनाम, कंबोडिया, लाओस, म्यांमार (बर्मा), लंका, मलेशिया, इंडोनेशिया मिस्र, अर्जेंटीना, पेरू, मेक्सिको इत्यादि तक प्रचलित रही है। वस्तुतः भी 'विस्वरुपरघुवंशमनि' है, तत्वतः भी। राम और तुलसी को घटिया राजनीति से मुक्त रखना ही वरेण्य है।

सखी चलें मधुवन में

डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

सखी चलें मधुवन में मधुर गीत गाएं,
मधुरस मधुपान किए मधुप को छकाएं।
कान्हा की वंशी की मधुरध्वनि सुहाए,
मूरति मन मोहिनी को हृदय में बसाएं।
आओ अलि चलें संग श्याम को बुलाएं,
राधा ललिता के साथ मोहन को लाएं।
मधुरिम रस हास लास रास को रचाएं,
नृत्य करें मिलजुल कर मंजुलपद गाएं।
रसिया रसराज – राज छेड़ कर मनाएं,
प्रमुदित – मन सांवरे की बांसुरी चुराएं।
तिरछी कर भौंहन गोपाल को चिढ़ाएं,
मुरली को देन कहें सद्यरू नटि जाएं।
हरि के अधराधर पर वंशी मन भाए,
हास परिहास बीच गायों को चराएं।
वंशीवट श्याम चढ़े पीतांबर छाए,
तरनि तनूजा तट वेणु को बजाए।
गोपीरस मधुपराग मधुपकृष्ण पाए,
मनमोहन वंशी से पंचम सुर आए।

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई–पत्रिका

क्या आपकी लेखन में अभिरुचि है?

क्या आप भी कभी अपने विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कागज – कलम उठाते हैं?
क्या आप लेखक/लेखिका, कवि/कवियत्री है?

आपको **अध्यात्म संदेश** ई पत्रिका की ओर से आमंत्रण है, आप अपनी रचनाएं, कविताएं, गीत, लघु कथाएं हमें प्रेषित करें। आपकी रचनांए आलेख प्रकाशन योग्य होने पर उसका पत्रिका में अवश्य प्रकाशन किया जाएगा।

अपनी रचनायें हमें प्रेषित करते समय यह अवश्य सुनिश्चित करें कि यह रचना आपकी अपनी मौलिक कृति है और न तो यह किसी पत्र – पत्रिका – पुस्तक – ब्लॉग – वेबसाइट आदि में प्रकाशनार्थ विचाराधीन है और न ही कभी प्रकाशित हुई है।

आपकी रचना को मूल रूप में प्रकाशित/संपादित रूप में प्रकाशित करने अथवा प्रकाशित न करने का पूर्ण विवेकाधिकार संपादक मंडल का है।

आलेख भेजने की अंतिम तिथि 15 अगस्त 2023

विशेष : शब्द सीमा 500–750 शब्दों के मध्य होनी चाहिए

1. लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाइल में टाइप कराकर ही भेंजे। पी. डी. एफ फाइल न भेजें।
2. लेखक/लेखिका अपनी स्वरचित अप्रकाशित एवं मौलिक रचना के साथ कृपया अपना संक्षिप्त परिचय, व्हाट्सप नंबर, फोटो के साथ भेजें ।
3. आपकी स्वीकृत रचना आपके फोटो के साथ प्रकाशित की जायेगी। प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक देय नहीं है।
4. जनकल्याण हित में ज्ञान वर्धन हेतु यह ई पत्रिका पूर्णतः निः शुल्क है। अपनी रचनाएँ ई–मेलः **editor.adhyatmsandesh@gmail.com** पर प्रेषित करें।

– योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधान संपादक

इंद्र धनुष

डॉ. अर्चना प्रकाश
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, ऊत्तर प्रदेश

सुबह के छह बजे का अलार्म बजा और कुलजीत कौर हड़बड़ा कर बिस्तर से उठ गई। लन्दन के ब्रिसल्स में दो कमरों के छोटे से फ्लैट में वे पिछले दस वर्षो से रह रहीं हैं, और इसी फ्लैट से वे शुद्ध शाकाहारी भारतीय भोजन की टिफिन सर्विस का काम भी बखूबी करतीं हैं। अपने इस काम में वे भारतीय बेरोजगारों को छोटा मोटा काम भी देती हैं कि कम की तलाश में परदेस आये हुए युवकों को भीख न मांगनी पड़े। आज भी लन्दन आई इलाके में उन्हें एक प्रतिभाशाली भारतीय युवक मनप्रीत उन्हें मिला। जो बड़ी नौकरी के सपने ले कर लन्दन आया था। लेकिन जिस कम्पनी ने उसे भेजा था वो फर्जी निकली ।मनप्रीत का यहाँ जान पहचान का कोई न था, बेचारा परेशान दर दर भटक रहा था।

जब कुलजीत ने उससे पंजाबी में बात की तो वह जोर जोर से रोने लगा। उसने बताया कि वह इंजीनिरिंग इंस्टीटूट का टॉपर है,और उसे यहाँ आने और बड़ी नौकरी के लिए पांच लाख रुपए देने पड़े। तरस कखा कर कुलजीत उसे घर ले आई, और सप्लाई ब्वॉय की जगह सौ पाउंड प्रतिमाह पर उसे तब तक के लिए ठिकाना दे दिया, जब तक उसकी पढ़ाई के अनुसार उसे नौकरी नहीं मिल जाती।

मनप्रीत के आँसू कुलजीत के हृदय को झिंझोड़ रहे थे। वो सोच रही थी कि आखिर इतने छल फरेब, और जालसाजी के बाद भी भारतीय प्रतिभायें रोजगार के लिए विदेशों की ओर ही क्यों टकटकी लगाए रहते हैं? अपनी देश मे रोजगार इन्हें पसन्द क्यो नहीं आता? अपने प्रश्नों का उत्तर उसे अपने ही अतीत की यादों में मिल गया। उसे याद आया कि उसके पिता ने भी तो अनेक उच्च शिक्षित इंजीनियरो को सिर्फ भारत मे नौकरी करने की वजह से विवाह के लिए साफ मना कर दिया था। अपनी सुंदर सुविज्ञ इकलौती बेटी की शादी उन्होंने इंग्लैंड में बसे भारतीय इंजीनियर सतपाल सिंह से की, और पानी की तरह पैसा बहाया। उन्हें तो यही बताया गया था कि सतपाल सिंह इंग्लैंड की बहुत बड़ी कम्पनी लार्सन एंड लार्सन में मैनेजर के पद पर काम करता है, और भारतीय मुद्रा में लगभग दस लाख प्रतिमाह कमाता

है। इंग्लैंड में उसका अपना फ्लैट भी है। ऐसे में पिता के साथ कुलजीत भी सपनों में इंद्रधनुषी रंग भरने लगी। विवाह के बाद एक महीने कुलजीत पंजाब में सतपाल सिंह के घर रही, फिर वह पति के साथ लन्दन आ गयी। मायके से मिले हुए गहने व कपड़े भी कुलजीत साथ लाई थी। सतपाल का फ्लैट उसे खूब अच्छा लगा। दो अंग्रेज महिलाएं भी उसमें उसके साथ रहती थी। धीरे धीरे कुलजीत को पता चला कि सतपाल की सारी बातें झूठ हैं न फ्लैट उसका था न उसकी नौकरी ही बड़ी थी। सतपाल किसी ऑफिस में स्टोर कीपर था। उसका वेतन इतना नही था कि वह दो लोगो का खर्चा उठा सके।

कुलजीत के पैरों तले की जमीन खिसक चुकी थी। उसे लगा कि अपने माता पिता व परिवार को सतपाल की सच्चाई बता कर उन्हें दुःखी करने के अलावा उसे कुछ भी हासिल न होगा। इसीलिए उसने दिल कठोर कर के किसी से भी कुछ न कहने का दृढ़ निश्चय कर लिया। लगभग छह माह के अंदर सतपाल ने एक एक कर सारे जेवर कुलजीत से मांग कर मौज मस्ती में उड़ा दिए ।जब कुलजीत के सारे रुपए व गहने खत्म हो गए तब सतपाल उससे बेवजह लड़ाई करने लगा। इसी लड़ाई झगड़े में सतपाल ने उसे धक्का दे कर घर से निकल दिया और लन्दन के ही किसी कोर्ट का फर्जी डिवोर्स जो पहले से ही बनवा कर जेब में रखे था, उसे दिखा दिया। मात्र एक जोड़ी कपड़े में कुलजीत अनजान लोग अनजान देश लन्दन की सड़कों पर भटक रही थी। उसके आँसू रुकते नहीं थे। चार पांच लोगों से उसने सहायता की गुहार लगाई, मगर वे अनसुना करके चले गए।

तभी वहां पर सफेद फिएट से अधेड़ उम्र के सरदार जी अपनी पत्नी के साथ उतरे। कुलजीत उधर ही दौड़ी मगर दो दिन से भूखी होने के कारण चक्कर खा कर उनकी गाड़ी के पास ही गिर गयी। उसे देख सरदारनी घबरा गई और उसके मुँह पर पानी के छीटे मारने लगी। चेहरे पर पानी पड़ते ही कुलजीत ने आँखे खोल दी,और ठेठ पंजाबी में ही रोते हुए ही अपनी राम कहानी सरदार दम्पत्ति को सुनाई।

सरदार जी का हृदय कुलजीत के दुःख से पिघल गया, उन्होंने उसके सिर पर हाथ रखा, और बोले – 'पुत्तर तू हमारे घर चल। असी कुछ इंतजाम करेंगे। तब तक तू अपन के साथ ही रह। कुलजीत उनके साथ चली गयी, और उनके घर का सारा काम करने लगी। सरदार दम्पत्ति भी उसे बेटी की तरह मानने लगे।

सरदार जी ने ही कुलजीत को टिफिन सर्विस की सलाह दी, तथा उसे फुटकर समान के लिए बैंक से लोन भी दिलवाया। एक माह की भाग दौड़ के बाद कुलजीत का काम शुरू हो गया।

शुरुआत में सरदार जी की सहायता से ग्राहक मिले, किंतु बाद में स्वादिष्ट भोजन की चर्चा से उसे बहुत से ग्राहक व प्रसंशक मिल गए। कुछ पैसे जमा कर के कुलजीत ने किराए का छोटा सा फ्लैट भी ले लिया। पिछले अनेक वर्षो से कुलजीत इसी फ्लैट से टिफिन सर्विस चला रही है ।वो अक्सर सरदार दम्पत्ति से मिल कर उनका आशीष भी लेती है। क्यो की वह उन्हें माता पिता का सम्मान देती है। पिछले पांच वर्षो में कुलजीत लगभग सौ ऐसे हिन्दुस्तानियो को सहारा दे चुकी है, जो विषम परिस्थितिवश लन्दन में भीख मांगने को मजबूर थे। लेकिन अब वो सभी भारतीय कुलजीत को बड़ी बहन का दर्जा देते है और उसके परम् सहयोगी भी है। आखिर दुर्भाग्य व्यक्ति को कहा से कहाँ ले जाता है।

लेकिन अब सरदार दम्पत्ति अक्सर कुलजीत को अपने माता पिता को अपनी व सतपाल की वास्तविकता बताने का दबाव बनाने लगे। उनका ये भी कहना था कि उसे सतपाल से विधिवत डाइवोर्स ले लेना चाहिए।

जिससे भविष्य के निर्णय स्वयम ले सके। मगर कुलजीत इन दिनों एक अलग ही समस्या में उलझी हुई थी।

उसके सुस्वादु भोजन के प्रसंशक विलियम माइकल प्रायः दूसरे तीसरे दिन कुलजीत से मिलने आते और अपनी टूटी फूटी हिंदी में कुलजीत की तारीफों के ऐसे कसीदे पढ़ते की कुलजीत हंसते हंसते दोहरी हो जाती।

मगर जल्दी ही उसे अहसास हुआ कि माइकेल उससे प्रेम करने लगे हैं और शादी के ख्याली पुलाव पका रहें हैं। कुलजीत परेशान हो गयी। उसने पूरी शिद्दत से सतपाल से प्रेम किया था।

अब दुबारा वह किसी से भी प्रेम न कर सकेगी। माइकेल की प्रेम की बातों से उसके दिमाग की नसें फटने लगतीं।

अंततः सरदार दम्पत्ति ने ही कुलजीत से फोन नं. लेकर उसके माता पिता को फोन किया और उनकी बेटी की दुःखद परिस्थितियों की उन्हें पूरी जानकारी दे कर उन्हें लन्दन आने के लिए राजी किया। कुलजीत के मम्मी पापा लन्दन के हीथ्रो एयरपोर्ट पर उतरे तो कुलजीत मम्मी से लिपट कर खूब रोई। एयर पोर्ट से घर तक दोनों माँ बेटी के आँसू नहीं रुके। वे लोग तुरन्त ही

सतपाल से मिलना चाहते थे, किंतु कुलजीत ने उन्हें ये कह कर रोक दिया–'अभी सफर की थकान दूर कर ले फिर इस विषय का समाधान भी ढूंढ लेंगे।

वास्तव में कुलजीत को अब सतपाल में कोई दिलचस्पी न थी। कुल जीत ने अपने मम्मी पापा व सरदार दम्पत्ति को लन्दन की खास जगहें ब्लडी टावर, वैक्स म्यूसियम, कोहिनूर प्रदर्शनी आदि लगभग एक हफ्ते तक घुमाती रही, और स्वयं भी सुखद बदलाव से प्रसन्नचित रही। एक हफ्ते बाद वह सबको ले कर सतपाल के फ्लैट पर गयी। जिस औरत ने दरवाजा खोला उसने बताया कि वह सतपाल की पत्नी है, और चार महीने पहले ही उनकी शादी हुई है। तभी सतपाल वहाँ पर आ गया जो इतने सारे लोगो के साथ कुलजीत को देखकर हैरान था।

जब सरदार दम्पत्ति उसे पुलिस के हवाले करने की बात पर अड़ गए तो वह बुरी तरह सहम गया। वह उनके पैरों पर गिरता हुआ बोला – 'अंकल मैं कुलजीत के गहने व रुपये सब एक हफ्ते के अंदर सूद समेत लौटा दूंगा।' सारी बातें तय करके सभी लोग कुलजीत के साथ लौट आये।

एक हफ्ता बीत चुका था, किंतु सतपाल का कहीँ पता न था। लन्दन पुलिस पिछले चार दिनों से कुलजीत के पीछे पड़ी थी। क्यों कि सतपाल ने कुलजीत पर आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज करायी थी। कुलजीत को अपने बचाव का कोई रास्ता न मिला तो उसने विलियम माइकेल व सरदार दम्पत्ति की पुनः मदद ली और

लन्दन पुलिस के बड़े अधिकारी से मिली। उसने सतपाल के साथ अपनी शादी, फरेब, मानसिक उत्पीड़न व शारीरिक प्रताड़ना की सारी दास्तान उन्हें सुना दी और सतपाल के खिलाफ अपनी शिकायत लिखवाई कि उसकी जान खतरे में है।

लन्दन पुलिस अधिकारी गैरिक रिचर्ड्स ने दो पुलिस गार्ड उसे सुरक्षा के लिए दिए। लगभग दस दिनों बाद सतपाल पुलिस हिरासत में था। कुलजीत के सभी सहयोगियों व प्रशंसको ने उसके सम्मान में पार्टी आयोजित की। जिसमें सरदार दम्पत्ति के साथ उसके माता पिता भी शामिल थे। विलियम माईकेल को विश्वास था कि ऐसी संकट की घड़ी में कुलजीत की मदद की है तो वह उनकी तरफ जरूर हाथ बढ़ा देगी। लेकिन पार्टी के दूसरे ही दिन कुलजीत ने उनसे साफ साफ ही कह दिया – मि, माइकेल न तो मैं आपसे दोस्ती बढ़ा सकती हूं न ही प्यार या शादी की उम्मीद दे सकती हूँ । आप सिर्फ मेरे अच्छे कस्टमर हैं बस। बेचारे विलियम का चेहरा सूख गया। फिर वे कुलजीत से मिलने कभी नही आये लेकिन उनका लंच व डिनर दोनों ही कुलजीत के टिफिन सेंटर से जाते रहे।

लन्दन के हैपी होम अनाथालय से कुलजीत ने एक बच्ची को गोद लिया, और उसे लिल्ली कौर नाम दिया। अब लिल्ली ही उसकी बेटी, उसकी वारिस, उसका सर्वस्व थी। कुलजीत अच्छी तरह जानती थी कि उसके सपनों का इंद्र धनुष अब लिल्ली की खुशियों से सजेगा। कुलजीत का दृढ़ निश्चय था कि वो अब लिल्ली के इंद्र धनुष को कभी भी टूटने बिखरने नहीं देगी। ■

वर्षा ऋतु का गीत

प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

धूम मचाती जल बरसाती, वर्षा रानी आई ।
आज मगन मन वृक्ष ले रहे, झूम–झूम अँगड़ाई।।

वसुधा की सब प्यास बुझ गई, हुआ आज मन हर्षित।
मौसम में खुशियों की हलचल, पोर–पोर है पुलकित।।
हरियाली की बजी आज तो, मीठी–सी शहनाई।
आज मगन मन वृक्ष ले रहे, झूम–झूम अँगड़ाई।।

मेघों की तो दौड़भाग है, मोरों का है नर्तन।
हरियाया वन निज सत्ता का, करता ख़ूब प्रदर्शन।।
पावस के इस ख़ास दौर में,पोषित है तरुणाई।
आज मगन मन वृक्ष ले रहे,झूम–झूम अँगड़ाई।।

आतप का तो दौर ढल गया, जलबूँदों की महिमा।
आज बरसते जल में तो है, सुधा सरीखी गरिमा।।
दमक रही है नभ में बिजली, भय की सिहरन आई।
आज मगन मन वृक्ष ले रहे, झूम–झूम अँगड़ाई।।

कुँए, झील, तालाब भर गये, खेतों में है पानी।
अब किसान के मुखड़े पर है, खेले नई जवानी।।
सावन–भादों हर्षाये हैं, शिवपूजा मन भाई।
आज मगन मन वृक्ष ले रहे, झूम–झूम अँगड़ाई।।

वरुण देव की दया हो गई, आज प्रकृति आनंदित।
आकर्षण,सम्मोहन दिखता, हुआ नेह परिभाषित।।
उमड़ी–घुमड़ी सरिताओं में, दिखी नवल प्रभुताई।
आज मगन मन वृक्ष ले रहे, झूम–झूम अँगड़ाई।।

विरह जगाती है यह वर्षा, प्रियतम बिन मायूसी।
मिलना कैसे होगा अब तो, किस्मत हुई रुआँसी।।
इस सावन ने बैर भँजाया, तन में आग लगाई।
आज मगन मन वृक्ष ले रहे, झूम–झूम अँगड़ाई।।

जनमानस के श्रेष्ठ कवि रामभक्त तुलसीदास

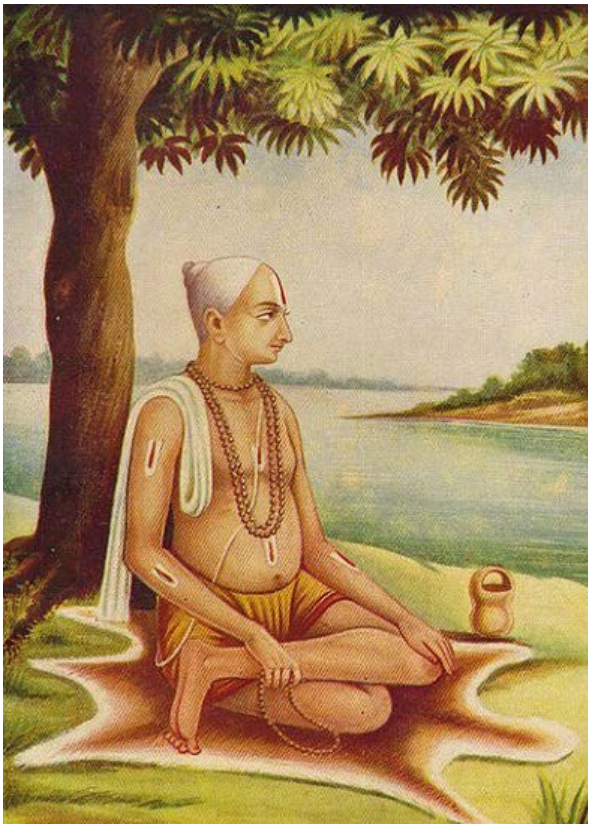

भावना दामले
स्वतंत्र लेखन
इंदौर (मध्य प्रदेश)

सबके लिए जो हितकारी होता है, कल्याणकारी होता है, सबका हित चाहने वाला ही सच्चा साहित्य होता है। ऐसा साहित्य रचने वाले साहित्यकार जनमानस में लोकप्रिय होते हैं। उनका साहित्य लोक मंगलकारी साहित्य होता है। ऐसे ही हिंदी साहित्य के लोकप्रिय राम भक्त श्रेष्ठ कवि है तुलसीदास जी। तुलसीदास जी ऐसे ही महान कवि तथा भक्त थे, जिन्होंने कलियुग में भगवान राम तथा रामभक्त हनुमान के दर्शन किये थे।

तुलसीदासजी का जन्म सन 1540 में बांदा जिला उत्तर प्रदेश के राजापुर ग्राम में माना जाता है। कुछ विद्वान इनका जन्म स्थान सोरों उत्तर प्रदेश भी मानते हैं। तुलसीदास जी के जन्म के बाद माता फिर कुछ वर्ष बाद इनके पिता का भी निधन हो गया। इनके गुरु नरहरि दास थे। इनके पास ही तुलसीदास की शिक्षा दीक्षा हुई। उन्होंने अपने गुरु से वेदों पुराणों तथा उपनिषदों का ज्ञान प्राप्त किया।

तुलसीदास जी का विवाह रत्नावली से हुआ। वे बहुत बुद्धिमती थी। तुलसीदास जी अपनी पत्नी को बहुत चाहते थे। एक बार उससे मिलने के लिए बड़ी कठिनाई से पहुंचे। तब रत्नावली को अच्छा नहीं लगा तब उसने कहा –

अस्थि चर्म मय देह यह, ता सौं ऐसी प्रीति। नेकु जो होती राम से, तो काहे भव भीत।।

इस बात का इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने घर परिवार छोड़ दिया और अपना सारा जीवन राम को समर्पित कर दिया। पूरे भारत में सभी तीर्थ स्थलों का भ्रमण किया और लोगों को राम कथा सुनाई। तुलसीदास जी ने लिखा है कि हनुमान जी ने उन्हें दर्शन दिए और रामकथा लिखने की प्रेरणा दी। हनुमान जी से ही भगवान राम से मिलने की इच्छा तुलसीदास जी ने प्रकट की। उसके बाद भगवान राम ने उन्हें दर्शन दिए थे पर पहली बार वे राम और लक्ष्मण को पहचान नहीं पाए इसलिए बहुत दुखी हुए। भगवान राम ने उन्हें फिर से दर्शन दिए थे। तुलसीदास जी चंदन घिस रहे थे, भगवान राम ने उनके सामने आकर तिलक करने को

कहा। तुलसीदास जी भगवान राम के भव्य रूप को देखकर तिलक करना भूल गए। तब भगवान राम ने स्वयं का और तुलसीदास जी का तिलक कर दिया।

चित्रकूट के घाट पै, भई संतन की भीर ।
तुलसीदास चन्दन घिसै, तिलक देत रघुवीर।।

तुलसीदास जी संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने आम लोगों के लिए रामचरितमानस हिन्दी (अवधि) भाषा में लिखीस उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की। इसके अलावा उनकी रचनाओं में विनय-पत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली, जानकी- मंगल, पार्वती मंगल आदि प्रमुख है। तुलसीदास जी ने भगवान राम को आधार मानकर मानव हृदय की सभी रागात्मक वृत्तियों का सुंदर चित्रण किया है। राम के आदर्श चरित्र के माध्यम से अनेक सामाजिक राजनीतिक आदर्शों की स्थापना की है। विनम्रता और तन्मयता के भावों का जो उच्च आदर्श तुलसीदास जी ने अपने कृतियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है वह भाव जगत की अमूल्य निधि है।

तुलसीदास जी भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा के राम काव्य के श्रेष्ठ कवि है। उनके सभी काव्य ग्रंथों में भगवान राम के प्रति एकनिष्ठता और अनन्य भक्ति भाव व्यक्त हुआ है। तुलसीदास जी जातक को प्रेम और भक्ति का परम आदर्श मानते हुए कहते हैं-

एक भरोसो, एक बल, एक आस बिस्वास।
एक राम घनश्याम, हित जातक तुलसीदास।।

अपने इष्ट देव राम के प्रति तुलसीदास जी के मन में अखंड प्रेम, भक्ति भाव श्रद्धा तथा विश्वास है। रामचरितमानस तथा विनय-पत्रिका दोनों में ही कवि की उत्कट भक्ति भावना की अभिव्यक्ति हुई है। तुलसीदास की भक्ति दास्य भाव की भक्ति है। वे अपना तथा भगवान राम का सेवक स्वामी का नाता मानते हैं।

ब्रह्म तू है, जीव हों, तू ठाकुर हों चेरो।
तात-मात गुरु सखा, तू सब विधि हि तू मेरो।।

वे अपने इष्ट देव राम को महान और सर्वगुण संपन्न मानते हैं तथा स्वयं को छोटा और छोटा मानते हैं। अपने आत्म निवेदन में वे कहते हैं –

राम सौं बड़ो है कौन? मोसो कौन छोटो?
राम सौं खरो है कौन? मोसो कौन खोटो?

कवि ने राम नाम की महिमा का प्रतिपादन स्थान स्थान पर किया है

राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे।
घोर भव नीर निधि नाम निज नाव रे।।

कवि ने सुंदरकांड में राम नाम की महिमा वर्णन करते हुए कहा है कि राम मनुष्यों के ही राजा नहीं हैं। अपितु वे समस्त लोकों के स्वामी हैं और काल के भी काल हैं। वे संपूर्ण ऐश्वर्य, यश, धर्म, वैराग्य और ज्ञान के भंडार हैं स वे विकार रहित, अजन्मा, व्यापक, अजेय, अनादि और अनंत ब्रह्म हैं।

तात राम नहि नर भूपाला। भुवनेश्वर कालहू कर काला ।।
ब्रम्ह अनामय अज भगवंता। व्यापक अजित अनादि अनंता।।

कृपा के समुद्र भगवान ने पृथ्वी, ब्राह्मण, गौ और देवताओं का हित करने के लिए ही मनुष्य शरीर धारण किया है। वे सेवकों को आनन्द देने वाले, दुष्टों के समूह का नाश करने वाले और वेद तथा धर्म की रक्षा करने वाले हैं।

गौ द्विज धेनु देव हितकारीस कृपा सिंधु मानुष तनुधारी।।
जन रंजन भंजन खल ब्राता। वेद धर्म रचछक सुनु भ्राता।।

श्री रघुनाथ जी के गुण समुह सुख के धाम, संदेह का नाश करने वाले और विषाद का दमन करने वाले हैं स हे मूर्ख मन! तू सब आशा, भरोसा त्यागकर निरंतर इन्हें गा और सुन स

सुख भवन संसय समन दवन विषाद रघुपति गुन गना।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुन हि संतत सठ मना।।

श्री रघुनाथ जी का गुणगान सम्पूर्ण सुन्दर मंगल दायक है। जो इसे आदर सहित सुनेंगे, वे बिना किसी जहाज अथवा अन्य साधन के ही इस भव सागर से तर जायेंगे।

सकल सुमंगल दायक रघुनाथ गुण गान।
सादर सुनहि ते तरहि भव सिंधु बिना जलजान।।

यूं ही नहीं मिलती राही को मंजिल, एक जुनून सा दिल में जगाना पड़ता है ।
पूछा चिड़िया से किसी ने कैसे बना लेते हो इतना सुंदर आशियाना,
बोली चिड़िया, भरनी पड़ती है उड़ान बार-बार, तिनका - तिनका उठाना पड़ता है ।

लोक संस्कृति की लय है कजरी

कृष्ण कुमार यादव
भारतीय डाक सेवा,
पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

भारतीय परम्परा का प्रमुख आधार तत्व उसकी लोक संस्कृति है। यहाँ लोक कोई एकाकी धारणा नहीं है बल्कि इसमें सामान्य–जन से लेकर पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, ऋतुएं, पर्यावरण, हमारा परिवेश और हर्ष–विषाद की सामूहिक भावना से लेकर श्रृंगारिक दशाएं तक शामिल हैं। 'ग्राम–गीत' की भारत में प्राचीन परंपरा रही है। लोकमानस के कंठ में, श्रुतियों में और कई बार लिखित–रूप में यह पीढ़ी–दर–पीढ़ी प्रवाहित होते रहते हैं। पं. रामनरेश त्रिपाठी के शब्दों में–'ग्राम गीत प्रकृति के उद्‌गार हैं। इनमें अलंकार नहीं, केवल रस है। छन्द नहीं, केवल लय है। लालित्य नहीं, केवल माधुर्य है। ग्रामीण मनुष्यों के स्त्री–पुरुषों के मध्य में हृदय नामक आसन पर बैठकर प्रकृति मानो गान करती है। प्रकृति का यह गान ही ग्राम गीत है....।' इस लोक संस्कृति का ही एक पहलू है– कजरी। ग्रामीण अंचलों में अभी भी प्रकृति की अनुपम छटा के बीच कजरी की धारायें समवेत फूट पड़ती हैं। यहाँ तक कि जो अपनी मिटटी छोड़कर विदेशों में बस गए, उन्हें भी यह कजरी अपनी ओर खींचती है। तभी तो कजरी अमेरिका, ब्रिटेन इत्यादि देशों में भी अपनी अनुगूंज छोड़ चुकी है। सावन के मतवाले मौसम में कजरी के बोलों की गूंज वैसे भी दूर–दूर तक सुनाई देती है –

रिमझिम बरसेले बदरिया,
गुईयां गावेले कजरिया
मोर सवरिया भीजै न
वो ही धानियां की कियरिया
मोर सविरया भीजै न।

वस्तुतः 'लोकगीतों की रानी' कजरी सिर्फ गायन भर नहीं है बल्कि यह सावन मौसम की सुन्दरता और उल्लास का उत्सवधर्मी पर्व है। प्रतीक्षा, मिलन और विरह की अविरल सहेली, निर्मल और लज्जा से सजी–धजी नवयौवना की आसमान छूती खुशी, आदिकाल से कवियों की रचनाओं का श्रृंगार कर, उन्हें जीवंत करने वाली 'कजरी' सावन की हरियाली बहारों के साथ जब फिजा में गूंजती है तो देखते ही बनता है। प्रतीक्षा के पट खोलती लोकगीतों की श्रृंखलाएं इन खास दिनों में गजब सी हलचल पैदा करती हैं, हिलोर सी उठती है, श्रृंगार के लिए मन मचलता है और उस पर कजरी के सुमधुर बोल! सचमुच 'कजरी' सबकी प्रतीक्षा है, जीवन की उमंग और आसमान को छूते हुए झूलों की रफ्तार है। शहनाईयों की कर्णप्रिय गूंज है, सुर्ख लाल मखमली वीर बहूटी और हरियाली का गहना है, सावन से पहले ही तेरे आने का एहसास! महान कवियों और रचनाकारों ने तो कजरी के सम्मोहन की व्याख्या विशिष्ट शैली में की है। मौसम और यौवन की महिमा का बखान करने के लिए परंपरागत लोकगीतों का भारतीय संस्कृति में कितना महत्व है–कजरी इसका उदाहरण है। चरक संहिता में तो यौवन की संरक्षा व सुरक्षा हेतु बसन्त के बाद सावन महीने को ही सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। सावन में नयी ब्याही बेटियाँ अपने पीहर वापस आती हैं और बगीचों में भाभी और बचपन की सहेलियों संग कजरी गाते हुए झूला झूलती हैं–

घरवा में से निकले ननद–भउजईया
जुलम दोनों जोड़ी साँवरिया।

छेड़छाड़ भरे इस माहौल में जिन महिलाओं के पति बाहर गये होते हैं, वे भी विरह में तड़पकर गुनगुना उठती हैं ताकि कजरी की गूँज उनके प्रीतम तक पहुँचे और शायद वे लौट आयें–

सावन बीत गयो मेरो रामा
नाहीं आयो सजनवा ना।
.....
भादों मास पिया मोर नहीं आये
रतिया देखी सवनवा ना।

यही नहीं जिसके पति सेना में या बाहर परदेश में नौकरी करते हैं, घर लौटने पर उनके सांवले पड़े चेहरे को देखकर पत्नियाँ कजरी के बोलों में गाती हैं –

गौर–गौर गइले पिया
आयो हुईका करिया
नौकरिया पिया छोड़ दे ना।

एक मान्यता के अनुसार पति विरह में पत्नियाँ देवि 'कजमल' के चरणों में रोते हुए गाती हैं, वही गान कजरी के रूप में प्रसिद्ध है–

सावन हे सखी सगरो सुहावन
रिमझिम बरसेला मेघ हे
सबके बलमउवा घर अइलन
हमरो बलम परदेस रे।

नगरीय सभ्यता में पले–बसे लोग भले ही अपनी सुरीली धरोहरों से दूर होते जा रहे हों, परन्तु शास्त्रीय व उपशास्त्रीय बंदिशों से रची कजरी अभी भी उत्तर प्रदेश के कुछ अंचलों की खास लोक संगीत विधा है। कजरी के मूलतः तीन रूप हैं– बनारसी, मिर्जापुरी और गोरखपुरी कजरी। बनारसी कजरी अपने अक्खड़पन और बिन्दास बोलों की वजह से अलग पहचानी जाती है। इसके बोलों में अइले, गइले जैसे शब्दों का बखूबी उपयोग होता है, इसकी सबसे बड़ी पहचान 'न' की टेक होती है–

बीरन भइया अइले अनवइया
सवनवा में ना जइबे ननदी।
.....
रिमझिम पड़ेला फुहार
बदरिया आई गइले ननदी।

विंध्य क्षेत्र में गायी जाने वाली मिर्जापुरी कजरी की अपनी अलग पहचान है। अपनी अनूठी सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण मशहूर मिर्जापुरी कजरी को ही ज्यादातर मंचीय गायक गाना पसन्द करते हैं। इसमें सखी–सहेलियों, भाभी–ननद के आपसी रिश्तों की मिठास और छेड़छाड़ के साथ सावन की मस्ती का रंग घुला होता है–

पिया सड़िया लिया दा मिर्जापुरी पिया
रंग रहे कपूरी पिया ना
जबसे साड़ी ना लिअईबा
तबसे जेवना ना बनईबे
तोरे जेवना पे लगिहें मजूरी पिया
रंग रहे कपूरी पिया ना।

विंध्य क्षेत्र में पारम्परिक कजरी धुनों में झूला झूलती और सावन भादो मास में रात में चौपालों में जाकर स्त्रियाँ उत्सव मनाती हैं। इस कजरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पीढ़ी दर पीढ़ी चलती हैं और इसकी धुनों व पद्धति को नहीं बदला जाता। कजरी गीतों की ही तरह विंध्य क्षेत्र में कजरी अखाड़ों की भी अनूठी परम्परा रही है। आषाढ़ पूर्णिमा के दिन गुरू पूजन के बाद इन अखाड़ों से कजरी का विधिवत गायन आरम्भ होता है। स्वस्थ परम्परा के तहत इन कजरी अखाड़ों में प्रतिद्वन्दता भी होती है। कजरी लेखक गुरु अपनी कजरी को एक रजिस्टर पर नोट कर

देता है, जिसे किसी भी हालत में न तो सार्वजनिक किया जाता है और न ही किसी को लिखित रूप में दिया जाता है। केवल अखाड़े का गायक ही इसे याद करके या पढ़कर गा सकता है–

कइसे खेलन जइबू
सावन में कजरिया
बदरिया घिर आईल ननदी
संग में सखी न सहेली
कईसे जइबू तू अकेली
गुंडा घेर लीहें तोहरी डगरिया।

बनारसी और मिर्जापुरी कजरी से परे गोरखपुरी कजरी की अपनी अलग ही टेक है और यह 'हरे रामा' और 'ऐ हारी' के कारण अन्य कजरी से अलग पहचानी जाती है–

हरे रामा, कृष्ण बने मनिहारी
पहिर के सारी, ऐ हारी।

सावन की अनुभूति के बीच भला किसका मन प्रिय मिलन हेतु न तड़पेगा, फिर वह चाहे चन्द्रमा ही क्यों न हो–

चन्दा छिपे चाहे बदरी मा
जब से लगा सवनवा ना।

विरह के बाद संयोग की अनुभूति से तड़प और बेकरारी भी बढ़ती जाती है। फिर यही तो समय होता है इतराने का, फरमाइशें पूरी करवाने का–

पिया मेंहदी लिआय दा मोतीझील से
जायके साइकील से ना
पिया मेंहदी लिअहिया
छोटकी ननदी से पिसईहा
अपने हाथ से लगाय दा
कांटा–कील से
जायके साइकील से।
.....
धोतिया लइदे बलम कलकतिया
जिसमें हरी– हरी पतियां।

ऐसा नहीं है कि कजरी सिर्फ बनारस, मिर्जापुर और गोरखपुर के अंचलों तक ही सीमित है बल्कि इलाहाबाद और अवध अंचल भी इसकी सुमधुरता से अछूते नहीं हैं। कजरी सिर्फ गाई नहीं जाती बल्कि खेली भी जाती है। एक तरफ जहाँ मंच पर लोक गायक इसकी अद्भुत प्रस्तुति करते हैं वहीं दूसरी ओर इसकी सर्वाधिक विशिष्ट शैली 'धुनमुनिया' है, जिसमें महिलायें झुक कर एक दूसरे से जुड़ी हुयी अर्धवृत्त में नृत्य करती हैं।

मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के कुछ अंचलों में तो रक्षाबन्धन पर्व को 'कजरी पूर्णिमा' के तौर पर भी मनाया जाता है। मानसून की समाप्ति को दर्शाता यह पर्व श्रावण अमावस्या के नवें दिन से आरम्भ होता है, जिसे 'कजरी नवमी' के नाम से जाना जाता है। कजरी नवमी से लेकर कजरी पूर्णिमा तक चलने वाले इस उत्सव में नवमी के दिन महिलायें खेतों से मिट्टी सहित फसल के अंश लाकर घरों में रखती हैं एवं उसकी साथ सात दिनों तक माँ भगवती के साथ कजमल देवी की पूजा करती हैं। घर को खूब साफ–सुथरा कर रंगोली बनायी जाती है और पूर्णिमा की शाम को महिलायें समूह बनाकर पूजी जाने वाली फसल को लेकर नजदीक के तालाब या नदी पर जाती हैं और उस फसल के बर्तन से एक दूसरे पर पानी उलचाती हुई कजरी गाती हैं। इस उत्सवधर्मिता के माहौल में कजरी के गीत सातों दिन अनवरत् गाये जाते हैं।

कजरी लोक संस्कृति की जड़ है और यदि हमें लोक जीवन की ऊर्जा और रंगत बनाये रखना है तो इन तत्वों को सहेज कर रखना होगा। कजरी भले ही पावस गीत के रूप में गायी जाती हो पर लोक रंजन के साथ ही इसने लोक जीवन के विभिन्न पक्षों में सामाजिक चेतना की अलख जगाने का भी कार्य किया है। कजरी सिर्फ राग–विराग या श्रृंगार और विरह के लोक गीतों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें चर्चित समसामयिक विषयों की भी गूँज सुनायी देती है। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान कजरी ने लोक चेतना को बखूबी अभिव्यक्त किया। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान कजरी ने लोक चेतना को बखूबी अभिव्यक्त किया। आजादी की लड़ाई के दौर में एक कजरी के बोलों की रंगत देखें–

केतने गोली खाइके मरिगे
केतने दामन फांसी चढ़िगे
केतने पीसत होइहें जेल मां चकरिया
बदरिया घेरि आई ननदी।

1857 की क्रान्ति पश्चात जिन जीवित लोगों से अंग्रेजी हुकूमत को ज्यादा खतरा महसूस हुआ, उन्हें कालापानी की सजा

दे दी गई। अपने पति को कालापानी भेजे जाने पर एक महिला 'कजरी' के बोलों में गाती है–

अरे रामा नागर नैया जाला काले पनियां रे हरी
सबकर नैया जाला कासी हो बिसेसर रामा
नागर नैया जाला काले पनियां रे हरी
घरवा में रोवै नागर, माई और बहिनियां रामा
से जिया पैरोवे बारी धनिया रे हरी।

स्वतंत्रता की लड़ाई में हर कोई चाहता था कि उसके घर के लोग भी इस संग्राम में अपनी आहुति दें। कजरी के माध्यम से महिलाओं ने अन्याय के विरूद्ध लोगों को जगाया और दुश्मन का सामना करने को प्रेरित किया। ऐसे में उन नौजवानों को जो घर में बैठे थे, महिलाओं ने कजरी के माध्यम से व्यंग्य कसते हुए प्रेरित किया–

लागे सरम लाज घर में बैठ जाहु
मरद से बनिके लुगइया आए हरि
पहिरि के साड़ी, चूड़ी, मुंहवा छिपाई लेहु
राखि लेई तोहरी पगरइया आए हरि।

सुभाष चन्द्र बोस ने जंग–ए–आजादी में नारा दिया कि– ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा, फिर क्या था पुरूषों के साथ–साथ महिलाएं भी उनकी फौज में शामिल होने के लिए बेकरार हो उठीं। तभी तो कजरी के शब्द फूट पड़े–

हरे रामा सुभाष चन्द्र ने फौज सजायी रे हारी
कड़ा–छड़ा पैंजनिया छोड़बै, छोड़बै हाथ कंगनवा रामा
हरे रामा, हाथ में झण्डा लै के जुलूस निकलबैं रे हारी।

महात्मा गाँधी आजादी के दौर के सबसे बड़े नेता थे। चरखा कातने द्वारा उन्होंने स्वावलम्बन और स्वदेशी का रूझान जगाया। नवयुवतियाँ अपनी–अपनी धुन में गाँधी जी को प्रेरणास्त्रोत मानतीं और एक स्वर में कजरी के बोलों में गातीं–

अपने हाथे चरखा चलउबै
हमार कोऊ का करिहैं
गाँधी बाबा से लगन लगउबै
हमार कोई का करिहैं।

कजरी में 'चुनरी' शब्द के बहाने बहुत कुछ कहा गया है। आजादी की तरंगें भी कजरी से अछूती नहीं रही हैं–

एक ही चुनरी मंगाए दे बूटेदार पिया
माना कही हमार पिया ना
चद्रशेखर की बनाना, लक्ष्मीबाई को दर्शाना
लड़की हो गोरों से घोड़ां पर सवार पिया।
जो हम ऐसी चुनरी पइबे, अपनी छाती से लगइबे
मुसुरिया दीन लूटै सावन में बहार पिया
माना कही हमार पिया ना।
.....
पिया अपने संग हमका लिआये चला
मेलवा घुमाये चला ना
लेबई खादी चुनर धानी, पहिन के होइ जाबै रानी
चुनरी लेबई लहरेदार, रहें बापू औ सरदार
चाचा नेहरू के बगले बइठाये चला
मेलवा घुमाये चला ना
रहइं नेताजी सुभाष, और भगत सिंह खास
अपने शिवाजी के ओहमा छपाये चला
जगह–जगह नाम भारत लिखाये चला
मेलवा घुमाये चला ना

उपभोक्तावादी बाजार के ग्लैमरस दौर में कजरी भले ही कुछ क्षेत्रों तक सिमट गई हो पर यह प्रकृति से तादातम्य का गीत है और इसमें कहीं न कहीं पर्यावरण चेतना भी मौजूद है। इसमें कोई शक नहीं कि सावन प्रतीक है सुख का, सुन्दरता का, प्रेम का, उल्लास का और इन सब के बीच कजरी जीवन के अनुपम क्षणों को अपने में समेटे यूं ही रिश्तों को खनकाती रहेगी और झूले की पींगों के बीच छेड़–छाड़ व मनुहार यूँ ही लुटाती रहेगी। कजरी हमारी जनचेतना की परिचायक है और जब तक धरती पर हरियाली रहेगी कजरी जीवित रहेगी। अपनी वाच्य परम्परा से जन–जन तक पहुँचने वाले कजरी जैसे लोकगीतों के माध्यम से लोकजीवन में तेजी से मिटते मूल्यों को भी बचाया जा सकता है।

अच्छे कपड़े पहनने से कोई आदमी बड़ा नहीं होता, बड़ा तो वो होता है जो अच्छे विचार रखता हो ।

मोह

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
अध्यक्ष – बृजलोक साहित्य कला संस्कृति अकादमी (न्यास)
आगरा, उत्तर प्रदेश

जीवन अर्थात् प्राण सभी जीवों को प्रिय होता है। भले ही यह जीवन रुदन से शुरू होकर रुदन पर समाप्त होता है। वहीं जीवन में कई बार ऐसे प्रसंग भी आ जाते हैं कि पुनः –पुनः रुदन का सामना करना ही पड़ता है। परंतु रुदन बुरा नहीं है, यह भी जीवन का एक अभिन्न हिस्सा ही है। जैसे – हंसना, गाना, सोना, खाना आदि क्रियाएं हैं।

जीवन से कोई मुक्त नहीं होना चाहता, चाहे कितनी भी विपरीत परिस्थितियां आ जायें। हां कभी– कभी अपवाद स्वरूप कुछ अत्याधिक कमजोर जीव जीवन से हार मानलेते हैं। संसार का हर जीव जीवन से प्रेम करता है। वह स्वयं के जीवन को बचाने के लिए हमेशा संघर्षरत रहता है। वह अनंत काल तक जीना चाहता है, परंतु यह संभव नहीं है। प्रकृति द्वारा प्रदान एक निश्चित आयु तक ही प्राणी जीवन जीता है और फिर स्वतः ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

शरीर का अत्यंत लाचार, कमजोर, दयनीय स्थिति में पहुंचने पर प्राणी इससे मुक्त नहीं होना चाहता। यह जीवन से मोह ही है। वह जीना चाहता है चिरकाल तक, फिर चाहे घुट – घुटकर ही क्यों न जीना पड़े। उसका मोह संसार से खत्म ही नहीं होता। जीवन की तमाम विद्रूपताओं, संघर्षों को दरकिनार करके कहता फिरता है कि 'अभी यह कार्य अधूरा है, अभी वह कार्य अधूरा है, बच्चे छोटे हैं, पढ़ाना– लिखाना है, शादी– विवाह करना है, घर– द्वार बनाना है, न जाने क्या–क्या ?'

सारी उम्र बीत गई, परंतु सबसे कहता है– अभी मेरी उम्र ही क्या है। यही संसार से मोह है। और इसी मोह के चक्कर में मनुष्य जीवनभर पापकर्म करने से भी नहीं चूकता। वह ईश्वर के बनाये विधान को ही भूल जाता है। मोहवश अपना–अपना करते इस संसार से कूच कर जाता है। यही जीवन का दुःखद अंत है। इसे अध्यात्म की राह पर चलकर सुधारा जा सकता है।

कजलियां नहीं महज एक देशज पर्व

बुजुर्गों की वैज्ञानिक सोच जिस पर करो गर्व

सुश्री इंदु सिंह 'इंदु श्री'
उपसम्पादक (अध्यात्म संदेश)
स्वतंत्र लेखिका व विचारक
नरसिंहपुर (मध्य प्रदेश)

भारतीय संस्कृति और इसकी परम्परायें भले ही लोगों को आज अपनी संकीर्ण या अति–शिक्षित व आधुनिक मानसिकता की वजह से पुरातन व अनुपयोगी ही नहीं सिरे से खारिज कर खत्म कर देने लायक लगती पर, गहराई से सोचे तो बेहद वैज्ञानिक हैं। इसलिये जैसे ही हिंदू तीज–त्यौहार आता सब एक सिरे से सियार की तरह रेंकने लगते और तरह–तरह की खामियां निकाल तार्किकता की कसौटी पर उन्हें परखने लगते है। ऐसे करते हुए वे ये भूल जाते कि हमारे ऋषि–मुनि व बुजुर्ग भले ही पढ़े–लिखे कम हो या बाहरी ज्ञान कम हो लेकिन, अनुभव में वो बेहद पके हुये थे। उन्होंने अपना जीवन प्रकृति की प्रयोगशाला में गुजारा जहाँ नित नये–नये परीक्षण व होते बदलावों को बड़े नजदीक से न केवल देखा बल्कि, उनको समझने का प्रयास किया। जिसके आधार पर फिर कोई निष्कर्ष निकाला और उसे आगे की पीढ़ी तक हस्तांतरित करने के लिये इसे किसी रीति–रिवाज या परंपरा में बदल दिया ताकि, ये आगे और आगे निर्बाध बढ़ती जाये।

मगर, जैसे ही आगे की जनरेशन ने अपनी आँखों पर पश्चिम सभ्यता का ब्लू चश्मा लगाया उसे अपनी ही जड़े कमजोर नजर आने लगी, जबकि उन्हीं दूसरे देशों से सीखते तो समझते कि सभी अपनी प्राचीनतम धरोहरों को बचाने सतत प्रयासरत रहते और अपनी मातृभूमि पर शर्म नहीं गर्व करते हैं। जबकि, यहाँ तो आये दिन जिसे देखो उसे ही अपने देश पर लज्जा आती तब इन कुतर्की दिमागों में कहीं ये ख्याल नहीं आता कि देश कोई व्यक्ति या जीता–जागता इंसान नहीं बल्कि, एक ऐसा भूखंड जो हमारे अस्तित्व से मिलकर बना और हमारे कर्मो से ही जाना जाता है। जैसा हम करेगे वैसा ही उसका स्वरुप दिखाई देगा ऐसे में उसको गाली देना या बुरा कहना वास्तव में अपने आप को ही गलत कहना है। हमने विकास के चरणों में अपनी उन सभी कुरीतियों व प्रथाओं को त्याग दिया जो वर्तमान में अर्थहीन थी

मगर, जिनके पीछे गहन शोध व वैज्ञानिकता छिपी उन आंचलिक या राष्ट्रीय पर्वो से मुंह मोड़ना हमारी अज्ञानता कहलायेगी।

जब आज से दस–बीस साल बाद कोई हमें ये बतायेगा कि हमने अपने इन रीति– रिवाजों को छोड़ दिया इसलिये ये पतन हो रहा तो हम वापस घूमकर लौटेंगे मगर, हो सकता तब तक उसे पुनर्जीवित करना संभव न हो तो जो शेष उसका सम्मान करें उसे दिल से अपनाये, मनाये। जैसे कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र का एक ऐसा ही स्थानीय पर्व कजलियाँ या भुजरियाँ है। जिसकी शुरुआत नागपंचमी के दूसरे दिन से होती जब लोग अपने खेतों से टोकरी में लाई मिट्टी में गेहूं बो देते और रक्षाबंधन तक उन्हें दूध, खाद व पानी देकर बड़े जतन से उनकी देखभाल करते हैं। उन्हें सूर्य की तेज रौशनी से दूर घर के भीतर रखते और रक्षाबंधन के दूसरे दिन गेहूं के इन नन्हे–नन्हे रोपों जिन्हें कजलियां कहते के कोमल पत्ते तोडकर पहले देवताओं को समर्पित कर फिर छोटे उन्हें अपने हाथों में लकर सयानों के सामने प्रस्तुत करते हैं। तब वे बड़े दुलार से उन्हें उनके कानों के ऊपर लगा देते फिर छोटे उनके चरण छूकर आशीष और शगुन पाते हैं। यहाँ तक कि इसके आदान–प्रदान से आपसी मन–मुटाव व दुश्मनी भी खत्म की जा सकती जो दर्शाता कि हमारे पूर्वज बड़े समझदार थे इसलिये उन्होंने ये रिवाज बनाया है। जिससे कि यदि कभी रिश्तों में गिला–शिकवा आ भी जाये तो इस तरह के मिलन समारोहों के आयोजनों से उसे मिटाया जा सके और यदि किसी के घर में गमी हो तो इस दिन उसके घर जाकर उसके दुःख में सहभागी बन सके ऐसा लोकाचार या सौहार्द्र क्या पश्चिमी सभ्यता में सम्भव है?

इसके अलावा इसके पीछे एक सुस्पष्ट वैज्ञानिक सोच जिसके जरिये इनके पकने पर ये अनुमान लगाया जाता कि इस बार फसल कैसी होगी क्योंकि, इनके द्वारा आगामी फसल के पूर्व बीजों का परीक्षण भी कर लिया जाता है। जिस तरह से ये पैदा होती उन्हें देखकर ये पता चलता कि किस घर के बीज स्वस्थ व रोगमुक्त है तो वे इसकी अदला–बदली कर अच्छी फसल प्राप्त कर लेते है। पर, हम तो तकनीकी युग में ये मानने लगे कि हमारे बुजुर्गो को तो अकल ही नहीं थी न जाने क्या–क्या त्यौहार बना दिये, न जाने कैसी–कैसी रस्में हमारे सर पर लादकर चले गये हैं। बस, अपने घटिया दिमाग से इनको समाप्त करने तरह–तरह के कुतर्क रचते रहते ऐसे में जो नासमझ वो इनके झांसे में आ जाते तो नुकसान तो देश का ही होता है। यदि हम अपने बुजुर्गो की बताई राह पर चले तो कोई नहीं जो हमें नीचा दिखा सके या हम पर शासन कर सके मगर, इसके लिये पहले विदेशी चश्मा आँख से उतारना पड़ेगा तब हम समझ पायेंगे कि देश कोई दुश्मन नहीं जिसके सर पर ठीकरा फोड़ मुक्त हो जाओ। ये तो हमारा ही प्रतिबिंब जो जैसे हम होंगे वैसा ही उसका अक्स दिखाई देगा इसलिये खुद को बदलो, खुद को सुधारो देश स्वतः ही बदलेगा, सुधरेगा।

इस उम्मीद के साथ कि हम अपनी परम्पराओं का सम्मान करना सीखेंगे सबको कजलिया की शुभकामनायें और ईश्वर से ये प्रार्थना की आप सब कजलियों की तरह खुश और धन धान्य से भरपूर रहे।

आदि देव महादेव

डॉ. सुनीता सिंह 'सुधा'
लेखिका, कवियत्री, गीतकार
वाराणसी

जटा शंकरी शीश पर, गौरी भूषित वाम।
पुरपति शिव वाराणसी, विश्वनाथ सुख धाम।।

भूत भुजग धर अंग पर, दिव्य त्रिलोचन रूप।
पूजित शिव वाराणसी, विश्वनाथ जग भूप।।

गंगा शोभित शीश पर, वाम पार्वती भाग।
हालाहल विष शिव पिए, मधुरिम शिव का राग।।

शंभु महा गुरु देवता, वेद ज्ञान आचार्य।
कला मूल नटेश हुए, सोमेश्वर अनिवार्य।।

चन्द्र मुकुट शोभा लिए, करते तांडव नृत्य।
शिव शाश्वत शुभ देवता, संस्कृति के सौकृत्य।।

आशुतोश सोमेश्वरम, आदिनाथ जग सिद्ध।
रुद्र दक्षिणामूर्ति के, प्रेम संग अनुविद्ध।।

शिव पौराणिक देवता, पंच देवो प्रधान।
परमब्रम्ह परमेश्वरम, महिमा मंडित मान।।

सर्वसिद्धि दायक सदा, परम शिवा शिव रूप।
ज्योति लिंग शाश्वत प्रकट, विश्व पंच के भूप।।

रूप वांगमय शिव समझ, हैं कल्याण स्वरूप।
सर्वसिद्धि दायक हुए, देव दनुज के भूप।।

शिव पुराण मानुष सुने, हुआ पाप से मुक्त।
मनवांछित फल भोगता, परम आत्म से युक्त।।

शांत स्वयंभू शिव सदा, करते हैं कल्याण।
साधक साधे मंत्र जो, पाता है निर्वाण।।